दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः4 : अंकः 51 | ग्वालियर,शनिवार 2 नवम्बर 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

दिवाली का मौका सभी के लिए बहुत खास होता है हर घर रौशन और हर दिल जगमग रहता है।

यही समय है जब आप अपने परिवार के साथ मिलकर खुशियां बांटते हैं। यकीनन त्योहार के समय बहुत कुछ होता है करने के लिए, लेकिन काम के बीच कभी भी दोस्तों और रिश्तेदारों को नहीं भूला जाता है। आपका एक मैसेज रिश्तेदारों और परिवार वालों के लिए ढेर सारा प्यार भेज सकता है।कहने को दिवाली पर एक दूसरे को बधाई देना सिर्फ एक रिवाज है, लेकिन दिल से भेजा हुआ एक मैसेज भी लोगों को आपकी याद दिलाने के लिए काफी होता है। यही कारण है कि लोग एक दूसरे को इस दिन याद करते हैं। अगर आप भी अपनों को बधाई देना चाहते हैं, तो चलिए हम आपको बताते हैं कुछ खास मैसेज और संदेश।

दीपावली मतलब अंधेरे के आगे उजाला। यह उजाला शुभ है, खुशी और संपन्नता का आह्वान है। दीपों की दीपावली में प्रकाश है, सद् विचार है, अच्छेपन की चाह है तो लक्ष्मी का आह्वान है। यह इस प्रार्थना का पर्व भी है कि जीवन में, परिवार में खुशियां आए। सब सुखी समृद्ध हों। आप भी साफ-सफाई के साथ यह मनोकामना करते हुए इस पर्व को मनाएं कि सुख- समृद्धि का अपना दिया हमेशा जलता रहे!

ढेर सारी शुभकामनाएं, मन से है कामना कि लक्ष्मी का स्थिर वास हो दीप जले, रोशनी बढ़े, उजाला फैले और घर-परिवार में चिरस्थाई सुख-समृद्धि रहे।
-हरिशंकर व्यास

दिवाली के पटाखों की तरह गूंजे आपका संसार,
दीप की रोशनी से रोशन हो आपका घर-आंगन,
बच्चों के आएं एग्जाम में अच्छे नंबर और भरी रहे आपकी तिजोरी,
यही कामना कर रहा है हमारा तन-मन
दिवाली की शुभकामनाएं

घर पर माँ लक्ष्मी पूजन का शुभ मुहूर्त -

इस वर्ष संवत 2081 के अनुसार अमावस्या 31 अक्टूबर 2024 को दिन में 3:53 बजे से प्रारंभ होकर 1 नवंबर 2024 को शाम 6:16 बजे समाप्त होगी। **31 अक्टूबर की शाम को 06:25 से लेकर सायं 7:13 के बीच का समय का है। कुल मिलाकर 48 मिनट का यह मुहूर्त सर्वश्रेष्ठ रहेगा। 01 नवंबर को सायं 05:36 मिनट से लेकर 06:16 मिनट तक लक्ष्मी पूजन के लिए करीब 40 मिनट का ही शुभ मुहूर्त मिलेगा।**

नब्ज पर हाथ -अजीत द्विवेदी

लक्ष्मीजी की कृपा तो गिनती के लोगों पर ही हैं

भारत में करोड़पतियों, अरबपतियों की संख्या बढ़ रही है। आयकर विभाग का आंकड़ा है कि एक साल में देश में 75 हजार नए करोड़पति बने हैं। देश में करोड़पतियों की संख्या बढ़ कर 2.83 लाख हो गई है, जो तीन साल पहले सिर्फ 27 हजार थी। इस तरह देश में करोड़पतियों की संख्या तीन साल में 13 गुना हो गई है। एक करोड़ से ज्यादा आय बताने वाले जिस रफ्तार से बढ़े हैं उससे कुछ कम रफ्तार से बढ़े हैं 50 लाख से एक करोड़ आय बताने वाले और 10 से 50 लाख की आय बताने वालों की संख्या में बढ़ोतरी का औसत उससे भी कम है। जहां तक पांच से 10 लाख तक आय वालों की बात है तो उनकी संख्या या तो स्थिर है या बहुत मामूली बढ़ोतरी है। पांच लाख से कम आय वालों की संख्या बढ़ नहीं रही है, बल्कि घट रही है। यानी गरीबी बढ़ रही है और साथ साथ अमीरी भी बढ़ रही है।

हालांकि यह आंकड़ा सही हो सकता है कि देश में संपूर्ण गरीबी यानी एब्सोल्यूट पॉवर्टी कम हो रही है लेकिन बड़ी आबादी ऐसी है, जो मध्य वर्ग से निम्न मध्य वर्ग में और निम्न मध्यवर्ग से निम्न वर्ग में जा रही है। इस बात को प्रमाणित करने वाले कई आंकड़े सरकारी और निजी एजेंसियों की ओर से लगातार प्रस्तुत किए जा रहे हैं। मिसाल के तौर पर भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों को ही लिया जा सकता है, जिसने बताया है कि पिछले 10 साल में 72 फीसदी भारतीयों की आय में कमी आई है। पूरे देश में दोपहिया वाहनों की बिक्री घटी है। छोटी कारों की बिक्री भी कम हुई है तो छोटे मकान या फ्लेट्स का बिकना भी कम हो गया है। अब तो अखबारों में सस्ते घरों और सस्ती गाड़ियों के विज्ञापन भी नहीं दिखाई देते हैं। देश में ट्रेक्टर की बिक्री कम हुई है, जो एक साथ कई बातों का संकेत है। रिजर्व बैंक का ही अध्ययन है कि आय के अनुपात में महंगाई ज्यादा बढ़ी है, खास कर खाने पीने की चीजों की महंगाई। तभी आम भारतीय घरों में खाने की थाली से पौष्टिकता कम होती जा रही है।

इस बात को एफएमसीजी यानी फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक नेस्ले के चेयरमैन और एमडी सुरेश नारायणन ने बेहतर तरीके से समझाया। उन्होंने कहा कि भारत का मध्य वर्ग सिकुड़ रहा है, जिससे एफएमसीजी की अधिकतर कंपनियों का कारोबार भी सिकुड़ रहा है। उनके लिए अपने उत्पाद बेचना मुश्किल होता जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रीमियम खपत अब भी ठीक है। इसका मतलब है कि आयकर विभाग की ऊपर बताई गई जो रिपोर्ट है वह सही है कि उच्च आय वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ रही है, जिससे प्रीमियम उत्पादों की खपत बढ़ रही है। लेकिन एफएमसीजी का सारा कारोबार तो मध्य वर्ग की खपत से चलता है क्योंकि इसका आकार बहुत बड़ा है। अब इसका आकार सिकुड़ रहा है और इसकी खर्च करने की क्षमता भी कम हो रही है।

एक विडम्बना यह भी है कि जो वर्ग सबसे तेजी से बढ़ रहा है, कर में उसका हिस्सा उस अनुपात में नहीं बढ़ रहा है। ऑक्सफेम की एक रिपोर्ट के मुताबिक शीर्ष 10 फीसदी यानी 10 लाख से ऊपर की आय घोषित करने वाले तमाम लोग या उससे आसपास के लोगों का जीएसटी में हिस्सा सिर्फ 10 फीसदी है, जबकि सबसे निचले 50 फीसदी लोगों का जीएसटी में हिस्सा 64.3 फीसदी है। यानी सबसे कमजोर आर्थिक हैसियत वाली देश की 50 फीसदी आबादी दो तिहाई के करीब जीएसटी भरती है। इसका मतलब है कि अगर रिफंड देकर सरकार ने 15 लाख करोड़ रुपया जीएसटी वसूला तो उसमें 10 लाख करोड़ रुपया उन लोगों का है, जो देश के सबसे कमजोर आर्थिक हैसियत वाले हैं। ये 50 फीसदी वो लोग हैं, जिनके पास देश की कुल संपत्ति का सिर्फ तीन फीसदी है। इसके बरक्स देश की एक फीसदी आबादी के पास कुल संपत्ति का 40.6 फीसदी हिस्सा है। शीर्ष 10 फीसदी के पास देश की कुल 80 फीसदी संपदा है, जो जीएसटी में सिर्फ एक तिहाई का योगदान करता है।

बहरहाल, चालू वित्त वर्ष यानी 2023-24 में नेस्ले इंडिया के कारोबार में एक फीसदी की कमी आई है। हालांकि उसका मुनाफा 1.4 फीसदी बढ़ा है। यह चमत्कार कीमतों में तीन फीसदी की बढ़ोतरी से हुआ है। सोचें, यह कैसी विडम्बना है! कंपनियों का टॉप बैंड मतलब उनकी बिक्री नहीं बढ़ रही है लेकिन लोअर बैंड यानी मुनाफा बढ़ रहा है क्योंकि महंगाई बढ़ रही है। कहने की जरुरत नहीं है कि इसी बढ़ती महंगाई की वजह से वस्तु व सेवा कर यानी जीएसटी की वसूली बढ़ रही है। बहरहाल, नेस्ले इंडिया ने कहा है कि पिछली दो तीन तिहाई से कारोबार में बढ़ोतरी नहीं हो रही है, जबकि 2016 से 2022 के बीच छह से सात फीसदी की सालाना दर से बढ़ोतरी हो रही थी।

यह रिपोर्ट सिर्फ नेस्ले इंडिया की नहीं है। हिंदुस्तान यूनिलीवर और टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स की भी है। इन कंपनियों ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता खर्च में धीरे धीरे बढ़ोतरी हो रही है या स्थिति सुधार रही है लेकिन शहरी क्षेत्रों में लगातार सुस्ती बढ़ रही है। ये सारी कंपनियां शहरी क्षेत्र में सुस्ती दूर करने और ग्रामीण इलाकों में कारोबार बढ़ाने के नए उपायों पर विचार कर रही हैं। इन सबकी रिपोर्ट में एक बात कॉमन दिखी है। सबने माना है कि सरकारी खर्च में बढ़ोतरी से शहरी क्षेत्र में भी तेजी लौट सकती है। सोचें, कैसे पूरी अर्थव्यवस्था सरकारी खर्च पर निर्भर होती जा रही है! निजी उद्यम कम होता जा रहा है, निजी निवेश कम हो रहा है और लोगों की जेब खाली हो रही है। **-शेष हाल-फिलहाल पेज पर**

महाराष्ट्र मुकाबले की तस्वीर साफ

आखिर में कांग्रेस को 102 सीटें मिलीं। दूसरी ओर भाजपा 148 सीटों पर चुनाव लड़ रही है।

मुंबई ■

महाराष्ट्र विधानसभा की सभी 288 सीटों के लिए नामांकन की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद चुनावी तस्वीर कुछ हद तक साफ हो गई है। यह तय हो गया है कि महायुति में भाजपा और महा विकास अघाड़ी में कांग्रेस सबसे बड़े दल की तरह चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा का ज्यादा सीटों पर लड़ना पहले से तय था लेकिन अघाड़ी में अंत समय तक खींचतान चलती रही और आखिर में कांग्रेस को 102 सीटें मिलीं। दूसरी ओर भाजपा 148 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। कई सीटों पर अब भी बहुकोणीय मुकाबला है। चार नवंबर को नाम वापसी के बाद ही स्थिति पूरी तरह से साफ होगी।

बहरहाल, मंगलवार को नामांकन समाप्त हुआ। इस बार 7,995 उम्मीदवारों ने नामांकन किया है। आखिरी दिन 4,996 ने पर्चे भरे।सत्तारूढ़ महायुति की ओर से 148 उम्मीदवारों के साथ भाजपा और महा विकास अघाड़ी में 103 सीटके साथ कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी है।दोनों पार्टियां 2019 के विधानसभा चुनाव से कम सीटों पर लड़ रही हैं। भाजपा ने पिछली बार 164 तो कांग्रेस ने 147 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे थे।इसका कारण यह है कि इस बार दोनों पार्टियां ज्यादा सहयोगियों के साथ चुनाव लड़ रही हैं। भाजपा की सहयोगी

पार्टियों में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिव सेना 80 और उप मुख्यमंत्री अजित पवार की एनसीपी 53 सीटों पर चुनाव लड़ रही हैं। दूसरी ओर कांग्रेस के सहयोगियों में उद्धव ठाकरे की शिव सेना 89 और शरद पवार की एनसीपी 87 सीटों पर मैदान में हैं। पिछले चुनाव में अविभाजित शिव सेना 124 और अविभाजित एनसीपी भी 124 सीटों पर लड़ी थी। एमवीए ने छह सीटें छोटी सहयोगी पार्टियों के लिए छोड़ी है। महायुति की दो और एमवीए की तीनसीटों पर अभी भी स्थिति साफ नहीं है।

इस बीच पूर्व मंत्री नवाब मलिक की उम्मीदवारी को लेकर भाजपा और अजित पवार की पार्टी में टकराव हो गया है। मानखुर्दशिवाजीनगर सीट से एनसीपी नवाब मलिक को उम्मीदवार बनाया है।महायुति की ओर से यह सीट शिवसेना शिंदे गुट को दी गई है और सुरेश पाटिल को उम्मीदवार बनाया है। भाजपा ने भी पाटिल का समर्थन करते हुए कहा है कि उसके नेता मलिक के लिए प्रचार नहीं करेंगे।मुंबई भाजपा के अध्यक्ष आशीष शेलार ने बुधवार को कहा- हमारी पार्ट का स्टैंड क्लियर है। हम पहले भी नवाब मलिक की उम्मीदवारी के खिलाफ थे। अब भी उनका समर्थन नहीं करेंगे, क्योंकि उनके दाऊद इब्राहिम से लिंक होने की बात सामने आई थी।

अयोध्या में 28 लाख दीये जलाए गए

अयोध्या। इस साल दीपोत्सव पर अयोध्या में सरयू किनारे 28 लाख दीये जलाने का नया रिकॉर्ड बना। राम जन्मभूमि मंदिर के उद्घाटन के बाद पहली दिवाली के अवसर पर ज्यादा भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। सरयू नदी के 55 घाटों पर 28 लाख दीये जलाए गए। पिछले साल 22 लाख दीये जलाए गए थे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर में पहला दीप जलाकर दीपोत्सव का शुभारंभ किया। 16 सौ अर्चकों ने सरयू आरती की।

इससे पहले, रामायण पर आधारित झांकियों का प्रदर्शन हुआ। रामतचरितमानस में वर्णित कथा के मुताबिक भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ पुष्पक विमान से पहुंचे। मुख्यमंत्री ने उनका स्वागत किया और उनका रथ खींचा। इसके बाद रामकथा पार्क योगी ने राम की आरती उतारी और राज तिलक किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा- ये दीप जो आपके द्वारा जलाए जाएंगे, वो केवल दीप नहीं हैं, ये सनातन धर्म का विश्वास है।

फोटो-एएनआई

भारत-चीन के सैनिक एक दूसरे को मिठाई खिलाएंगे

नई दिल्ली। पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी एलएसी पर हुए समझौते के तहत भारत और चीन की सेना के वापस लौटने और गश्त की तैयारियों के बीच 31 अक्टूबर को

दिवाली के दिन दोनों देशों के सैनिक एक दूसरे को मिठाई खिलाएंगे। इसके बाद बातचीत के जरिए गश्त की बारीकियां तय की जाएंगी। गौरतलब है कि भारत और चीन की सेना के देपसांग के मैदान और डेमचोक में हटने की प्रक्रिया पूरी हो गई है।

इसके बाद गुरुवार, 31 अक्टूबर को दिवाली पर चीन और भारत के सैनिक एकदूसरे को मिठाई खिलाएंगे। बताया गया है कि सीमा पर पहले की तरह यानी अप्रैल 2020 से पहले की तरह गश्त को लेकर जल्दी ही सैन्य कमांडर स्तर के अधिकारियों के बीच बातचीत होगी। गोरतलब है क सैन्य कमांडर स्तर की अनेक दौर की वार्ता के बाद ही दोनों देशों के सैनिकों के पीछे हटने और फिर से गश्त शुरू करने का समझौता हुआ।

गौरतलब है कि भारत और चीन के बीच समझौते की खबर 21 अक्टूबर को सरकार की ओर से दी गई थी। उसके बाद 25 अक्टूबर से सैनिकों की वापसी शुरू हुई। इसके बाद समझौते को लेकर विदेश मंत्री एस जयशंकर ने 27 अक्टूबर को कहा था कि सैनिकों की वापसी पहला कदम है। अगला कदम तनाव कम करना है। उन्होंने कहा- ये तनाव तभी कम होगा, जब भारत को यकीन हो जाए कि चीन भी ऐसा ही चाह रहा है।

कनाडा के मंत्री का बड़ा खुलासा

कनाडा सरकार के मंत्री ने संसदीय समिति के सामने कहा उन्होने गृह मंत्री अमित शाह का नाम बताया।

नई दिल्ली ■

कनाडा की जस्टिन ट्रूडो सरकार के एक मंत्री ने बड़ा खुलासा किया है। संसदीय समिति के सामने कनाडा सरकार के मंत्री ने स्वीकार किया है कि सिख अलगाववादियों के खिलाफ कार्रवाई के मामले में अमित शाह का नाम उसने अमेरिकी अखबार को बताया था। यह पहली बार है, जब ट्रूडो सरकार के किसी मंत्री ने इस मामले में अमित शाह का नाम लिया। हालांकि मंत्री ने यह नहीं बताया कि भारत के गृह मंत्री के इस मामले में शामिल होने की जानकारी उसे कहां से और कैसे मिली थी।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया की रिपोर्ट्स के मुताबिक, कनाडा के उप विदेश मंत्री डेविड मॉरिसन मंगलवार को एक संसदीय समितिके सामने पेश हुए थे।मॉरिसन ने संसदीय समिति से कहा कि उन्होंने अमेरिकी अखबार 'वॉशिंगटन पोस्ट' को बताया था कि इस मामले में भारत के गृह मंत्री शामिल हैं। मॉरिसन ने कहा कि अमेरिकी अखबार को भारत और कनाडा मीटिंग से जुड़ी जानकारी उन्होंने ही दी थी।भारतीय विदेश मंत्रालय और कनाडा

स्थित भारतीय उच्चायोग ने इस मामले पर तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की है। हालांकि, भारत सरकार कनाडा के ऐसे पिछले सभी आरोपों को निराधार बताते हुए इसमें किसी भी तरह से शामिल होने से इनकार कर चुकी है।

कनाडा के अखबार 'सीबीसी न्यूज' के मुताबिक डेविड मॉरिसन मंगलवार को राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी पब्लिक सेफ्टी एंड नेशनल सिक्योरिटी कमेटी के सामने गवाही देने पहुंचे थे। रिपोर्ट के मुताबिक इस समिति से जुड़े सांसद रेकल डैंचो ने मॉरिसन से पूछा कि 'वॉशिंगटन पोस्ट' तक यह जानकारी कैसे पहुंची? इस पर मॉरिसन ने कहा-मैंने जानबूझकर 'वॉशिंगटन पोस्ट' को चुना। दरअसल हम ऐसा अखबार चाहते थे, जो अंतरराष्ट्रीय हो और जो हमारी कहानी बता सके। इसके लिए मैंने एक पत्रकार को चुना, जिसका इस मामले में लंबा अनुभव था और उसने इस विषय पर पहले भी कई बार लिखा था।

मॉरिसन ने बताया कि पत्रकार ने उनसे पूछा- क्या यह (अमित शाह) वही शख्स हैं। मैंने कहा कि हां, यह वही हैं।इससे पहले 16 अक्टूबर को जस्टिन ट्रूडो ने एक आयोग के सामने कहा था कि पिछले साल यानी 2023 के सितंबरमें जब उन्होंने हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंट्स के शामिल होने का आरोप लगाया था, तब उनके पास केवल खुफिया जानकारी थी। कोई ठोस सबूत नहीं था। गोरतलब है कि 'वॉशिंगटन पोस्ट' ने 14 अक्टूबर को कनाडाई अधिकारियों के हवाले से दावा किया था कि गृह मंत्री अमित शाह और भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ ने मिलकर कनाडा में खुफिया जानकारी इकट्ठा करने और खालिस्तानी आतंकियों पर हमले की इजाजत दी थी।

आयुष्मान भारत योजना पर केजरीवाल का हमला

नई दिल्ली ■

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद अब दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल की बारी थी। उन्होंने केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना पर जम कर हमला किया और कहा कि इस योजना का लाभ किसी को नहीं मिला है। उन्होंने दिल्ली सरकार की योजना की तारीफ करते हुए इससे हर व्यक्ति का इलाज होता है। इससे पहले मंगलवार को बुजुर्गों के लिए आयुष्मान भारत योजना में पांच लाख तक मुफ्त इलाज की योजना लॉन्च करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि दिल्ली और पश्चिम बंगाल सरकार राजनीतिक कारणों से अपने यहां इस योजना को लागू नहीं कर रहे हैं।

इस पर पलटवार करते हुए अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को कहा कि सीएजी को आयुष्मान भारत योजना में काफी गड़बड़ियां मिली हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार की योजना के तहत दिल्ली के हर शख्स को मुफ्त इलाज मिलता है। पांच रुपए की गोली हो या करोड़ों का इलाज हो, यह पूरा मुफ्त रहता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की योजना को प्रधानमंत्री को पूरे देशमें लागू करनी चाहिए। केजरीवाल ने कहा कि अगर प्रधानमंत्री कहेंगे तो इसका लाभ उठाने वाले लाखों लोगों के नाम उनको भेज दिए जाएंगे।

केजरीवाल ने बुधवार को कहा- क्या आयुष्मान भारत योजना से लोगों को लाभ हुआ? जिन राज्यों में आयुष्मान योजना लागू है, उन राज्यों में आज तक मैं एक भी व्यक्ति से नहीं मिला जिसका आयुष्मान भारत में इलाज हुआ हो। उन्होंने कहा- मेरी प्रधानमंत्री से विनती है कि वे दिल्ली के मॉडल का अध्ययन करें और आयुष्मान भारत योजना की जगह दिल्ली मॉडल को पूरे भारत में लागू करें, जिससे लोगों का जमीन पर फायदा हो।

इससे पहले प्रधानमंत्री ने कहा था कि उन्हें अफसोस है कि इस योजना में दिल्ली और बंगाल शामिल नहीं है, क्योंकि दोनों राज्यों की सरकारों ने इसे मंजूरी नहीं दी। इस बीच भाजपा ने दिल्ली में आयुष्मान लागू नहीं करने के आम आदमी पार्टी सरकार के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में रिट याचिका दाखिल कराई है। इसकी जानकारी दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने बुधवार को दी।

जगन की मां ने दिया शर्मिला का साथ

हैदराबाद। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी और उनकी बहन वाईएस शर्मिला के बीच संपत्ति को लेकर चल रहे विवाद में उनकी मां विजयम्मा ने अपनी बेटी का साथ दिया है। कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष वाईएस शर्मिला को लेकर उनकी मां ने कहा है कि उनकी बेटी के साथ अन्याय हुआ है। करोड़ों रुपए की संपत्तियों को लेकर कई दिनों से चल रहे विवाद में पहली बार विजयम्मा सामने आई हैं और उन्होंने एक ओपन चिट्ठी लिखी है।

पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत वाईएसआर रेड्डी की पत्नी विजयम्मा ने लिखा है- मेरे लिए सभी बच्चे बराबर हैं, लेकिन बेटी के साथ नाइंसाफी हो रही है। जगन को याद रखना चाहिए कि उन्हें राजनीति में सफल बनाने वाली उनकी बहन शर्मिला ही हैं।गौरतलब है कि जगन और उनकी बहन शर्मिला के बीच कंपनियों के शेयर और बेंगलुरु के पास स्थित येलहंका में 20 एकड़ जमीन को लेकर खींचतान जारी है। इनकी कीमत करोड़ों में मानी जाती है।

बहरहाल, जगन मोहन रेड्डी की पार्टी वाईएसआर कांग्रेस पार्टी ने विजयम्मा के पत्र का जवाब देते हुए कहा कि जगन रेड्डी ने कभी भी संपत्ति वापस नहीं मांगी। वाईएस जगन ने सद्भावना के कारण अपनी संपत्ति अपनी बहन शर्मिला के साथ शेयर की है। वह जगन के किसी भी बिजनेस में डायरेक्टर नहीं हैं। जगन ने शर्मिला के साथ व्यवहार में दयालुता रखी, जैसा कि कोई भी भाई करता है।

कैबिनेट मंत्री शुक्ला ने दीपावली के पावन पर्व पर किया पत्रकारों का सम्मान

गौरमी। दीपावली के पावन पर्व पर मध्य प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री एवं मेहगांव के लोकप्रिय विधायक श्री राकेश शुक्ला जी ने नगर के पत्रकारों का सम्मान किया सम्मान समारोह का आयोजन भाजपा मंडल अध्यक्ष सुभाष थापक के आवास पर हुआ इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि भाजपा मंडल अध्यक्ष सुभाष थापक विशेष स्थिति के रूप में हरिओम शर्मा मामा शिवराज यादव गणेश पाराशर राजेश मिश्रा मौजूद थे इस अवसर पर पत्रकारों का सम्मान करते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष सुभाष थापक ने कहा की मध्य सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री राकेश शुक्ला जी ने यह संदेश भेजा है की पत्रकार हमारे देश का एचौथा स्तंभ है समाज में जो भी बुराइयां हैं उनको अपनी खबरों के माध्यम से पत्रकार ही बाहर लेकर आते हे। एवं गरीब असहाय व्यक्ति को शासन की योजनाओं का लाभ दिलाने की पत्रकार हमेशा कोशिश करते हैं इसलिए मुझे पत्रकारों का सम्मान करते हुए बेहद खुशी हो रही है इस अवसर पर मुख्य रूप से केदार गुप्ता रणवीर परमार मुन्ना खान संतोष भदौरिया हरिओम कटारे राजीव श्रीवास्तव मुकेश भदोरिया रज्जन भदोरिया विजय प्रताप भदोरिया विष्णु परमार अशोक नरवरिया सौरव जैन उज्ज्वल कटारे चरण सिंह नरवरिया सहित तमाम पत्रकार मौजूद थे।

पत्रकार सम्मान समारोह बाई कैविनेट मंत्री राकेश शुक्ला

छोटी दिवाली पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने की खरीदारी, अपने घर के लिए ली मोमबत्तियां,upi से किया भुगतान

दिव्यांगजनों द्वारा बनाए गए समान की लगी थी दुकान, सिंधिया ने पहुँच कर खरीदी कई प्रकार की मोमबत्ती

दिल्ली की 'अंतर्दृष्टि' नामक संस्था द्वारा लगाई गई थी दुकान, दिव्यांगजनों द्वारा बनाई गयी मोमबत्ती और मिठाई को सबने किया पसंद।

महेंद्र शर्मा उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर। छोटी दिवाली के अवसर पर पूरा देश आज लाइट और मोमबत्तियां खरीदने में लगा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के दौरान भी ÷वोकल 4 लोकल÷ मुहिम पर जोर देते हुए सभी देशवासियों से त्योहारों का सामान स्वदेशी दुकानों से खरीदने का आग्रह किया था। आज केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी छोटी दिवाली पर दिल्ली में एक लोकल दुकान से खरीदारी की। दिव्यांगजनों द्वारा बनाई गई मोमबत्तियों को देख सिंधिया हुए प्रसन्न, कहा ÷सारा सामान बहुत सुन्दर है, कितने प्रतिभाशाली हैं आप सब÷बता दें कि दिल्ली स्थित संचार भवन में दिव्यांगजनों द्वारा बनाए गए सामान की दुकान लगी थी। जब सिंधिया संचार भवन पहुंचे तो वह दुकान देखकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने घर के लिए सामान लेने लगे।

हवन सामग्री की खुशबू वाली मोमबत्ती आयी सबसे ज्यादा पसंद, मिठाई का भी लिया आनंद -प्रधानमंत्री मोदी द्वारा चलाई जा रही 'वोकल फॉर लोकल' मुहिम को शक्ति देते हुए सिंधिया ने दुकान से विभिन्न तरीके का सामान लिया। बता दें कि इसमें एक ?स मोमबत्ती ङ्क हवन सामग्री से बनी हुई मोमबत्ती सिंधिया को सबसे जयदा पसंद आई। मोमबत्ती लेने के बाद सिंधिया ने दुकान के कर्मचारियों को धन्यवाद किया, उनके साथ मिठाई खाई और दिवाली की शुभकामनाएं दी।

UPI से किया Payment-बता दें कि सिंधिया ने अपनी पूरी खरीदारी का payment UPI के माध्यम से किया और आस पास के ग्राहकों को PI का इस्तेमाल करने के लिए आह्वान किया।

सीएमओ और अध्यक्ष की सूझबूझ से कबाड़ से जुगाड़ की अनोखी पहल से लाखों का काम किया चंद पैसों में

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर
मौ डॉ वेताल सिंह गौड़

आपने यह तो सुना होगा कि इंडिया जुगाड़ से चलता है हमारे देश भारत में बड़े-बड़े काम को जुगाड़ से कर लिया जाता है ऐसी ही एक सच्ची घटना

भिण्ड ।जिले की तहसील मौ नगर परिषद में कबाड़ से जुगाड़ की अनोखी पहल देखने को मिली है,यहां नगर परिषद ने टूटी फूटी सामग्री एकत्रित कर हेड पम्प के पुराने पाइपों से सड़क के डिवाइडर पर तिरंगे की शक्ल में ऐसी झिलमिल्ली लाइट को जुगाड़ से तैयार किया है जो आश्चर्यजनक लग रहा है ,उससे भी ज्यादा चौंकाने वाली बात यह है कि इस तैयारी में कोई भी नई सामग्री का इस्तेमाल नहीं क्या गया , कबाड़ से जुगाड़ की तैयारी मौ नगर पालिका सीएमओ महेश पुरोहित, एवं नगर पालिका अध्यक्ष पति सज्जन सिंह यादव की सूझबूझ से की गई कमाल क ी जनता बात तो यह है कि कबाड़ से जुगाड़ इतनी बेहतरीन तरीके से की गई की पूरे जिले भर में इसकी तारीफ हो रही है बताया जा रहा है कि ऐसी लाइट लगाने में करीब 1 से 2 करोड़ रुपए का खर्चा आता सी एम ओ महेश पुरोहित और नगरपालिका अध्यक्ष की सूझबूझ से कबाड़ के पाइपों से ही डिवाइडर पर लाइट को तैयार कर चालू कर दिया गया है जो कि ना कुछ खर्चे में ही तैयार हो चुकी है जिसकी तारीफ नगर की करते नहीं थक रही इस तैयारी में सबसे बड़ा योगदान सीएमओ नगर परिषद मौ महेश पुरोहित का बताया जा रहा है ,सीएमओ साहब ने पांच से सात दिन ,तक दिन रात इसी काम को पूरा कराने के लिए मौ नगर परिषद के स्टाफ के साथ मजदूरों की तरह लगकर काम किया है जिसका रिजल्ट नगर की झिलमिलाती लाइट के रूप में दिखाई दे रहा है जो कि काबिले तारीफ है

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 2 नवम्बर को लाल टिपारा गौशाला में करेंगे गोवर्धन पूजा ,गोवर्धन पूजा के साथ मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय कार्यक्रम भी होगा

संभागीय आयुक्त, आईजी व कलेक्टर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने लिया तैयारियों का जायजा

गोवर्धन पूजा के साथ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे

महेंद्र शर्मा उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर ।मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 2 नवम्बर को ग्वालियर में लाल टिपारा स्थित आदर्श गौशाला में गोवर्धन पूजा एवं मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के जिला स्तरीय समारोह में शामिल होंगे। भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा के अनुसार मुख्यमंत्री डॉ. यादव लाल टिपारा गौशाला में गौ-पूजन एवं गोवर्धन पूजा कर प्रदेश की खुशहाली की कामना करेंगे। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम व प्रतियोगितायें होंगी। साथ ही गौवंश के दूध व गोबर से बने उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगेगी। ज्ञात हो मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल पर राज्य सरकार द्वारा पूरे प्रदेश के हर जिले की गौशालाओं में गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से गोवर्धन पूजा व गौ-पूजन करने का निर्णय लिया गया है। लाल टिपारा गौशाला में 2 नवम्बर को मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मुख्य आतिथ्य में प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों का बुधवार को संभाग आयुक्त श्री मनोज खत्री ने पुलिस महानिरीक्षक श्री अरविंद सक्सेना व विभागों के अधिकारियों को दिए। साथ ही कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम गरिमा के अनुरूप हों। व्यवस्थायें ऐसी हों जिससे आयोजन में शामल होने आ रहे नागरिक सुविधाजनक तरीके से अपने स्थान पर पहुँच सकें। इसके लिये बैरीकेटिंग की जाए। पार्किंग की बेहतर व्यवस्था करने के लिये भी अधिकारियों से कहा गया। इ स अवसर पर लाल टिपारा गौशाला के प्रमुख संत ऋषभदेवानंद जी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार, नगर निगम आयुक्त श्री अमन वैष्णव, स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती नीतू माथुर, अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार, श्री कुमार सत्यम व श्री टी एन सिंह, अपर आयुक्त नगर निगम श्री विजय राज व श्री मुनीष सिकरवार सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे। ल ा ल टिपारा गौशाला में 2 नवम्बर को गोवर्धन पूजा एवं मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह में मथुरा के कलाकारों द्वारा लोकनृत्य व भजन प्रस्तुत किए जायेंगे। साथ ही इस अवसर पर चित्रकला, फैंसी ड्रेस, लोकगीत व पारंपरिक खेल सितौलिया प्रतियोगिता भी होगी। कृष्ण, राधा व ग्वाला ङ्क ग्वालिनों के रूप में सजे-धजे बच्चे भी कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण होंगे। कार्यक्रम स्थल पर मक्खन व श्रीखण्ड तथा गोबर शिल्प, जैविक खाद व सीएनजी सहित गौवंश के गोबर से निर्मित 11 प्रकार के उत्पादों की प्रदर्शनी लगेगी।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ जायजा लिया। उन्होंने सभी व्यवस्थायें समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश नगर निगम आयुक्त एवं अन्य संबंधित

छोटी दिवाली के दिन दीपदान करने से परिवार के पितृ गण खुश होते है देवेंद्र प्रताप सिंह तोमर रामू भैया,,,,,,,,,

पोरसा,, ।विश्व में विशेष ख्याति प्राप्त ,मुक्तिधाम पोरसा के चरण सेवक डॉ अनिल गुप्ता के सानिध्य में दीप दान महोत्सव का श्री गणेश भूतनाथ की झांकी नागाजी धर्मशाला से प्रारंभ होकर मुख्य मार्ग से होती हुई मुक्तिधाम तक निकाली गई इस मौके पर उतम शर्मा नगर निरीक्षक ,थाना प्रभारी श्री राम नरेश यादव ,महेश पेगोरिया ,नरेंद्र राठौर ,राकेश अग्रवाल राम धुन बघेल ,संजय अग्रवाल ने आरती कर शोभा यात्रा प्रारंभ किया मुक्तिधाम से लेकर जौटई तिराहा तक दीपक प्रवज्लित किया गया वेदों में लिखा यम चतुदर्शी को जो दीप दान नदी और श्मशान में अपने पुवज़ो की स्मृति में किया जाता है साथ ही काल सर्प ,पित्र दोष दूर हो जाता है दीपदान का महत्व बहुत होता है ,,जो बेद और पुराणों में वर्णित है प्रत्येक व्यक्ति को अपने बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए दीपदान महोत्सव मनाया जा रहा है, आज भी दीपदान महोत्सव मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में देवेंद्र प्रताप सिंह तोमर उपाध्याय ,संत बृज किशोर दास पागल बाबा, पूर्व विधायक कमलेश सुमन,सुरेश गुप्ता ,आदि मौजूदथे,, कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर अनिल गुप्ता द्वारा किया गया इस मौके पर अतिथियों ने दीपदान के महत्व के बारे में विस्तार से बताया तथा कार्यक्रम की व्यवस्थाएं सभी शहर वासियों ने देखी,और कहा विश्व में कहीं श्मशान में दीप दान इस तरह से नहीं मनाया जाता है समिति के सदस्य ने अपनी जिम्मेदारीपूर्ण कर पोरसा के लोगो का दिल जीत लिया आलोक गुप्ता ,डॉ वर्मा राज कुमार बालमिक पंकज माहोरे ,महाराज सिंह महेंद्र बाल्मिक व शहर वासियों ने, उपस्थित सुनिश्चित कर संपूर्ण जगत की मंगल कामना के लिए दीप प्रज्वलित कर ईश्वर से कामना की

होते हैं तथा परिवार को मंशानुरूप आशीर्वाद प्रदान करते हैं हम आपको बता दें कि,श्री नागाजी धाम की तपोभूमि में स्थित अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मुक्तिधाम पोरसा में गत 20 वर्षों से लगातार रामू भैया ग्वालियर से पधारे,,तथा विशेष अतिथि के रूप में दिनेश शर्मा, अशोक सिंह तोमर ,भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष रामवीर सिंह तोमर ,अरविंद सिंह तोमर, संदीप

ऑनेनरी कैप्टन रैंक से सेवा निवृत्त होकर चंबल व अंचल को किया गौरवान्वित

सेना में 32 वर्ष सेवा उपरांत सेवानिवृत्त पर मानद ऑनेनरी कैप्टन उपाधि से सम्मानित किया गया,इस मौके पर पूर्व सैनिक संघ पोरसा ने निकाली रैली किया भव्य स्वागत,,,,

भीमसेन सिंह तोमर

पोरसा। कैप्टन अशोक सिंह तोमर सन 1992 में ग्वालियर से भर्ती हुए थे और 32 साल सेवाएं देने के बाद कैप्टन के पद से 31 अक्टूबर 2024 को हुए रिटायर आज गल्ला मंडी प्रांगण में स्थित शहीद पार्क पर पर पहुंचे जहां पूर्व सैनिक संघ पोरसा ने सम्मान किया साथ ही शहर में बैंड बाजा के साथ निकाली भव्य रैली कैप्टन अशोक सिंह तोमर कोथर कला ताल का पुरा हाल निवासी हैं हाल भिंड रोड पोरसा वही इस

मौके पर जनपद अध्यक्ष अनुराधा देवेश सिंह तोमर एवं तरसमा सरपंच भूरे सिंह तोमर एवं नगर पालिका उपाध्यक्ष ने कैप्टन अशोक सिंह तोमर का सम्मान किया।

दतिया आज दीपावली के पवित्र त्यौहार पर पहुंचे प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा जी

संदीप प्रधान उप संपादक

दैनिक पुष्पांजलि टुडे

दीपावली के पर्व के अवसर पर दतिया में पीतांबरा नगरी में भ्रमण कर सभी नगर वासियों को दीपावली की आत्मीय शुभकामनाएं दीं, भ्रमण के दौरान नगर वासियों के साथ-साथ अनेकौ कार्यकर्ता भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे

थाना बैरसिया पुलिस ने ज्वेलर्स की दुकान से हुई चोरी का किया खुलासा

बैरसिया ।। फरियादी दिलीप नामदेव निवासी बैरसिया थाना बैरसिया ने थाना उपस्थित आकर जुवानी रिपोर्ट किया कि फरियादी की बस स्टैण्ड बैरसिया चौराहे पर कैलाश नारायण एण्ड सन्स के नाम से ज्वैलरी शॉप है दिनांक 23.10.24 को दुकान पर तीन-चार महिलाएं ग्राहक बनकर आई और ज्वेलरी का सामान देखने लगी कुछ देर बाद वो महिलाएं सामान देखकर वहां से चली गयी। समय करीबन 05.00 बजे फरियादी ने अपने सोने के दाने वाले डिब्बे जिसमें करीबन 20 डिब्बियां थीं,को काउण्टर में चैक किया तो वह डिब्बा नहीं मिला। महिलायें फरियादी के काउन्टर से सोनू के दाने बाले डिब्बे को चोरी कर ले गई है चोरी की रिपोर्ट पर से प्रकरण पंजीबद्ध किया गया प्रकरण पंजीबद्ध कर थाना प्रभारी द्वारा तत्काल पुलिस अधीक्षक महोदय को घटना से अवगत कराया गया।

शुक्रवार को यातायात माह नवम्बर 2024 का शुभारंभ हुआ

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी शासन के निर्देशानुसार नवंबर माह को यातायात माह के रूप में मनाया जा रहा है । इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक मोहम्मद मुश्ताक द्वारा घण्टाघर से यातायात रैली के दौरान प्रतिभागियों को यातायात जागरुकता के विषय में सम्बोधित करते हुए, हरी झण्डी दिखाकर यातायात माह नवम्बर-2024 का शुभारम्भ किया गया । एसपी द्वारा जागरुकता कार्यक्रम के माध्यम से आम जनमानस में यातायात नियमों का पालन सम्बन्धी जागरूकता जैसे सीट बेल्ट हेलमेट पहनना, ओवर स्पीड में गाडी न चलाना, यातायात के संकेतों का उल्लंघन न करना, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन/ईयर फोन आदि का प्रयोग न करना, नशे/नींद की हालत में वाहन न चलाने आदि के संबंध में लोगों को जागरूक किया गया तथा यातायात नियमों के प्रति जागरुक रहकर उनका अक्षरशः पालन करने की उपस्थित सम्मानित आम जनमानस से अपेक्षा की। सड़क सुरक्षा जागरूकता हेतु आयोजित इस यातायात जागरूकता कार्यक्रम के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार उप जिलाधिकारी सदर, चन्द्र भूषण, क्षेत्राधिकारी सदर अभय नारायण राय, क्षेत्राधिकारी यातायात श्री अजय कुमार, उपजिलाधिकारी प्रशिक्षु नासिर, पुलिस उपाधीक्षक प्रशिक्ष सुनील कुमार भारद्वाज, पुलिस उपाधीक्षक बी.डी. उमराव, एआरटीओ कय्यूम, यातायात प्रभारी आलोक तिवारी सहित अन्य पुलिस अधिकारी कर्मचारीगण व सम्मानित पत्रकार प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया बन्धु व जनता के सम्मानित लोग उक्त भव्य कार्यक्रम में सम्मिलित किए गये। एसपी द्वारा आम जनमानस को संबोधित करते हुए बताया कि यातायात माह का शुभारम्भ 1 नवम्बर 2024 से किया जा रहा है जो कि 30 नवम्बर 2024 तक चलेगा । आप सभी लोगों से अनुरोध है कि आप सभी यातायात नियमों का पालन करें तथा आम जनमानस में यातायात के नियमों के सम्बंध में अपने स्तर से जागरुक करने का प्रयास करें जिससे कि इस जागरुकता कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके। दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगायें। दो पहिया वाहन चलाते समय तीन सवारी बैठाकर न चलें। बिना नंबर प्लेट के वाहन न चलायें। नशे की हालत में वाहन न चलायें। वाहन को ओवर स्पीड से न चलायें। सड़क पर सदैव अपनी वायीं दिशा में चलें। वाहन चलाते समय मोबाइल फोन/ईयर फोन आदि का प्रयोग न करें। चार पहिया वाहन (जैसे- कार आदि) चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करे।

खरगोन पुलिस ने हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया मध्य प्रदेश स्थापना दिवस

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

01 नवंबर 2024 को मनाया गया 69 वां मध्यप्रदेश स्थापना दिवस जिला खरगोन के समस्त थानों पर किया गया कार्यक्रम का आयोजन समस्त थानों एवं पुलिस चौकियों पर पुलिसकर्मियों ने गाया मध्यप्रदेश गान01 नवंबर को भारत के दिल के नाम से जाने जाने वाले राज्य मध्यप्रदेश के स्थापना के अवसर पर उसे वृहद स्तर पर मनाने के लिए पुलिस अधीक्षक खरगोन श्री धर्मराज मीना के द्वारा जिला खरगोन के प्रत्येक थाने पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन कर मध्यप्रदेश गान का गायन करने के लिए निर्देशित किया गया था । इसी क्रम मे जिला खरगोन के समस्त थानों एवं पुलिस चौकियों पर कार्यरत पुलिसकर्मियों के द्वारा हर्षोउल्लास के साथ मध्यप्रदेश गान का गायन कर मनाया गया ।

दीपावली : यह पर्व अलग-अलग नाम और विधानों से पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इसका एक कारण यह भी कि इसी दिन अनेक विजयश्री युक्त कार्य हुए हैं। बहुत से सुभ कार्यों का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना गया है। इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था। विक्रम संवत का आरम्भ भी इसी दिन से माना जाता है। अत: यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है।

ताकि जगमग हो जीवन

दीपावली या दीपोत्सव हमें 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात 'अंधेरे से ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर ले जाने का पर्व हैं। इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग भी मनाते हैं। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चोदह वर्ष के वनवास के बाद लौटे थे। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीए जलाए ।कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी।

तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। दीपावली दीपों का त्योहार है। दीवाली अँधेरे से रोशनी में जाने का प्रतीक है। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है झूठ का नाश होता है। दीवाली यही चरितार्थ करती है- असतो माऽ सद्गमय , तमसो माऽ ज्योतिर्गमय।

धार्मिक मान्यता आखिर क्या?

दीपावली के दिन आतिशबाजी की प्रथा के पीछे सम्भवतः एक यह धारणा है कि दीपावली-अमावस्या से पितरों की रात आरम्भ होती है। कहीं वे मार्ग भटक नहीं जाएं, इसलिए उनके लिए प्रकाश की व्यवस्था इस रूप में की जाती है। इस प्रथा का बंगाल में विशेष प्रचलन है।

धर्मग्रंथों के अनुसार कार्तिक अमावस्या को भगवान श्री रामचंद्रजी चौदह वर्ष का वनवास काटकर तथा असुरी वृत्तियों के प्रतीक रावणादि का संहार करके अयोध्या लौटे थे। तब अयोध्या वासियों ने राम के राज्यारोहण पर दीपमालाएं जलाकर महोत्सव मनाया था। इसीलिए दीपावली हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है।

यह पर्व अलग-अलग नाम और विधानों से पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इसका एक कारण यह भी कि इसी दिन अनेक विजयश्री युक्त कार्य हुए हैं। बहुत से सुभ कार्यों का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना गया है। इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था।

विक्रम संवत का आरम्भ भी इसी दिन से माना जाता है। अतः यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है। आज ही के दिन व्यापारी अपने वही-खाते बदलते हैं। तथा लाभ-हानि का ब्यौरा तैयार करते हैं।

लक्ष्मी पूजन

दीपावली पर लक्ष्मीजी का पूजन घरों में ही नहीं, दुकानों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में भी किया जाता है। कर्मचारियों को पूजन के बाद मिठाई, बर्तन और रुपये आदि भी दिए जाते हैं। दीपावली पर कहीं-कहीं जुआ भी खेला जाता है। इसका प्रधान लक्ष्य वर्ष भर के भाग्य की परीक्षा करना है।

इस प्रथा के साथ भगवान शंकर तथा पार्वती के जुआ खेलने के प्रसंग को भी जोड़ा जाता है, जिसमें भगवान शंकर पराजित हो गए थे। जहां तक धार्मिक दृष्टि का प्रश्न है आज पूरे दिन व्रत रखना चाहिए और मध्यरात्रि में लक्ष्मी-पूजन के बाद ही भोजन करना चाहिए। जहां तक व्यावहारिकता का प्रश्न है, तीन देवों-महालक्ष्मी, गणेशजी और सरस्वतीजी के संयुक्त पूजन के बावजूद इस पूजा में त्योहार का उल्लास ही अधिक रहता है। इस दिन प्रदोष काल में पूजन करके जो स्त्री-पुरुष भोजन करते हैं, उनके नेत्र वर्ष भर निर्मल रहते हैं। इसी रात को ऐन्द्रजालिक तथा अन्य तंत्र-मन्त्र वेत्ता श्मशान में मन्त्रों को जगाकर सुदृढ़ करते हैं। कार्तिक मास की अमावस्या के दिन भगवान विष्णु क्षीरसागर की तरंग पर सुख से सोते हैं और लक्ष्मी जी भी दैत्य भय से विमुख होकर कमल के उदर में सुख से सोती हैं। इसलिए मनुष्यों को सुख प्राप्ति का उत्सव विधिपूर्वक करना चाहिएं। लोकमान्यता के अनुसार इस दिन आंख में काजल न लगवाने वाला व्यक्ति अगले जन्म में छछून्दर रूप में विचरण करता है।

परंपरा अनुसार पूजन

लक्ष्मी जी के पूजन के लिए घर की साफ-सफ़ाई करके दीवार को गेरू से पोतकर लक्ष्मी जी का चित्र बनाया जाता है। लक्ष्मीजी का चित्र भी लगाया जा सकता है। संध्या के समय भोजन में स्वादिष्ट व्यंजन, केला, पापड़ तथा अनेक प्रकार की मिठाइयाँ होनी चाहिए।

लक्ष्मी जी के चित्र के सामने एक चौकी रखकर उस पर मौली बांधनी चाहिए। इस पर गणेश जी की व लक्ष्मी जी की मिट्टी या चांदी की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए तथा उन्हें तिलक करना चाहिए। चौकी पर छः चौमुखे व 26 छोटे दीपक रखने चाहिए और तेल-बत्ती डालकर जलाना चाहिए। फिर जल, मौली, चावल, फल, गुड़, अबीर, गुलाल, धूप आदि से विधिवत पूजन करना चाहिए। पूजा पहले पुरुष करें, बाद में स्त्रियां। पूजन करने के बाद एक-एक दीपक घर के कोनों में जलाकर रखें। एक छोटा तथा एक चौमुखा दीपक रखकर लक्ष्मीजी का पूजन करें। इस पूजन के पश्चात तिजोरी में गणेश जी तथा लक्ष्मी जी की मूर्ति रखकर विधिवत पूजा करें। अपने व्यापार के स्थान पर वहीखातों की पूजा करें। इसके बाद जितनी श्रद्धा हो घर की बहू-बेटियों को रुपये दें। लक्ष्मी पूजन रात के समय बारह बजे करना चाहिए।

इस दिन धन के देवता कुबेर जी, विघ्नविनाशक गणेश जी, राज्य सुख के दाता इन्द्रदेव, समस्त मनोरथों को पूरा करने वाले विष्णु भगवान तथा बुद्धि की दाता सरस्वती जी की भी लक्ष्मी के साथ पूजा करें। जहां दीवार पर गणेश, लक्ष्मी बनाएं हो वहाँ उनके आगे एक पट्टे पर चौमुखा दीपक और छः छोटे दीपक में घी, वत्ती डालकर रख दें तथा रात्रि के बारह बजे लक्ष्मी-पूजन करें। इसके लिए एक पाट पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर एक जोड़ी लक्ष्मी तथा गणेशजी की मूर्ति रखें। समीप ही 101 रुपये, सवा सेर चावल, गुड़, चार केले, हरी ग्वार की फली तथा पांच लड्डू रखकर, लक्ष्मी-गणेश का पूजन करके लड्डुओं से भोग लगाएं। फिर गणेश, लक्ष्मी, दीप, रुपये आदि सब की पूजा करें।

दीपकों का काजल सब स्त्री-पुरुषों को आंखों में लगाना चाहिए तथा रात्रि जागरण करके गोपाल सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। यदि इस दिन घर में बिल्ली आए तो उसे भगाना नहीं चाहिए। पूजन की समाप्ति के बाद अपने से बड़ों की चरण वंदना करनी चाहिए। दुकान की गद्दी की भी विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए।

रात को बारह बजे दीपावली पूजन के बाद चूने या गेरू में रूई भिगोकर चक्की, चूल्हा, सिल-बट्टा तथा सूप पर तिलक करना चाहिए। रात्रि की ब्रह्मबेला अर्थात प्रातःकाल चार बजे उठकर स्त्रियां पुराने सूप में कूड़ा रखकर उसे दूर फेंकने के लिए ले जाती हैं तथा सूप पीटकर दरिद्रता भगाती हैं। सूप पीटने का तात्पर्य है- 'आज से लक्ष्मीजी का वास हो गया। दुख दरिद्रता का सर्वनाश हो।' फिर घर आकर स्त्रियां कहती हैं- इस घर से दरिद्र चला गया है। हे लक्ष्मी जी! आप निर्भय होकर यहाँ निवास करिए।

दीपावली मनाने की प्रचलित धारणाएं

कहा जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक का इन्द्र बनाया था और इन्द्र ने स्वर्ग को सुरक्षित जानकर प्रसन्नतापूर्वक दीपावली मनाई थी। इसी दिन समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से लक्ष्मीजी प्रकट हुई थीं और भगवान विष्णु को अपना पति स्वीकार किया था।

इस दिन जब श्री रामचंद्र लंका से वापस आए तो उनका राज्यारोहण किया गया था। इस ख़ुशी में अयोध्यावासियों ने घरों में दीपक जलाए थे। इसी समय कृषकों के घर में नवीन अन्न आते हैं, जिसकी ख़ुशी में दीपक जलाए जाते हैं।

इसी दिन गुप्तवंशीय राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने 'विक्रम संवत' की स्थापना की थीं। धर्म, गणित तथा ज्योतिष के दिग्गज विद्वानों को आमन्त्रित कर यह मुहूर्त निकलवाया कि नया संवत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मनाया जाए। इसी दिन आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण हुआ था।

दीपावली की पहला पौराणिक कथा

एक बार सनत्कुमारजी ने सभी महर्षि-मुनियों से कहा- 'महानुभाव! कार्तिक की अमावस्या को प्रातःकाल स्नान करके भक्तिपूर्वक पितर तथा देव पूजन करना चाहिए। उस दिन रोगी तथा बालक के अतिरिक्त और किसी व्यक्ति को भोजन नहीं करना चाहिए। सन्ध्या समय विधिपूर्वक लक्ष्मीजी का मण्डप बनाकर उसे फूल, पत्ते, तोरण, ध्वज और पताका आदि से सुसज्जित करना चाहिए। अन्य देवी-देवताओं सहित लक्ष्मी जी का षोडशोपचार पूजन तथा पूजनोपरांत परिक्रमा करनी चाहिए। मुनिश्वरों ने पूछा- 'लक्ष्मी-पूजन के साथ अन्य देवी-देवताओं के पूजन का क्या कारण है?'

इस सनत्कुमारजी बोले -'लक्ष्मीजी समस्त देवी-देवताओं के साथ राजा वलि के यहाँ बंधक थीं। आज ही के दिन भगवान विष्णु ने उन सबको बंधनमुक्त किया था। बंधनमुक्त होते ही सब देवता लक्ष्मी जी के साथ जाकर क्षीर-सागर में सो गए थे। इसलिए अब हमें अपने-अपने घरों में उनके शयन का ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि वे क्षीरसागर की ओर न जाकर स्वच्छ स्थान और कोमल शैय्या पाकर यहीं विश्राम करें।

जो लोग लक्ष्मी जी के स्वागत की उत्साहपूर्वक तैयारियां करते हैं, उनको छोड़कर वे कहीं भी नहीं जातीं। रात्रि के समय लक्ष्मीजी का आह्वान करके उनका विधिपूर्वक पूजन करके नाना प्रकार के मिष्ठान्न का नैवेद्य अर्पण करना चाहिए। दीपक जलाने चाहिए। दीपकों को सर्वानिष्ट निवृत्ति हेतु अपने मस्तक पर घुमाकर चौराहे या श्मशान में रखना चाहिए।

दीपावली की दुसरी कथा

प्राचीनकाल में एक साहूकार था। उसकी एक सुशील और सुंदर बेटी थी। वह प्रतिदिन पीपल पर जल चढ़ाने जाती थीं। उस पीपल पर लक्ष्मी जी का वास था। एक दिन लक्ष्मीजी ने साहूकार की बेटी से कहा- 'तुम मेरी सहेली बन जाओ।' तब साहूकार के बेटी ने लक्ष्मी जी से कहा- 'मैं कल अपने पिता से पूछकर उत्तर दूंगी।' घर जाकर उसने अपने पिता को सारी बात कह सुनाई। उसने कहा- 'पीपल पर एक स्त्री मुझे अपनी सहेली बनाना चाहती है।' तब साहूकार ने कहा- 'वह तो लक्ष्मी जी हैं। और हमें क्या चाहिए, तू उनकी सहेली बन जा।'

इस प्रकार पिता के हां कर देने पर दूसरे दिन साहूकार की बेटी जब पीपल सींचने गई तो उसने लक्ष्मी जी को सहेली बनाना स्वीकार कर लिया। एक दिन लक्ष्मी जी ने साहूकार की बेटी को भोजन का न्यौता दिया। जब साहूकार की बेटी लक्ष्मी जी के यहाँ भोजन करने गई तो लक्ष्मी जी ने उसको ओढ़ने के लिए शाल दुशाला दिया तथा सोने की चौकी पर बैठाकर, सोने की थाली में अनेक प्रकार के भोजन कराए।

जब साहूकार की बेटी खा-पीकर अपने घर को लौटने लगी तो लक्ष्मी जी ने उसे पकड़ लिया और कहा- 'तुम मुझे अपने घर कब बुला रही हो? मैं भी तेरे घर जीमने आऊंगी।' पहले तो उसने आनाकानी की, फिर कहा -'अच्छा, आ जाना।' घर आकर वह रूठकर बैठ गई। तब साहूकार ने कहा- 'तुम लक्ष्मीजी को तो घर आने का निमन्त्रण दे आई हो और स्वयं उदास बैठी हो।' तब साहूकार की बेटी बोली- 'पिताजी! लक्ष्मी जी ने तो मुझे इतना दिया और बहुत उत्तम भोजन कराया। मैं उन्हें किस प्रकार खिलाऊंगी, हमारे घर में तो वैसा कुछ भी नहीं है।'

तब साहूकार ने कहा- 'जो अपने से बनेगा, वही ख़ातिर कर देंगे। तू जल्दी से गोबर मिट्टी से चौका देकर सफ़ाई कर दे। चौमुखा दीपक बनाकर लक्ष्मी जी का नाम लेकर बैठ जा।' तभी एक चील किसी रानी का नौलखा हार उठा लाई और उसे साहूकार की बेटी के पास डाल गई। साहूकार की बेटी ने उस हार को बेचकर सोने का थाल, शाल, दुशाला और अनेक प्रकार के भोजन की तैयारी कर ली। थोड़ी देर बाद लक्ष्मी जी उसके घर पर आ गईं। साहूकार की बेटी ने लक्ष्मी जी को बैठने के लिए सोने की चौकी दी। लक्ष्मी जी ने बैठने को बहुत मना किया और कहा- 'इस पर तो राजा-रानी बैठते हैं।' तब साहूकार की बेटी ने कहा- 'तुम्हें तो हमारे यहाँ बैठना ही पड़ेगा।' तब लक्ष्मी जी उस पर बैठ गईं। साहूकार की बेटी ने लक्ष्मीजी की बहुत ख़ातिरदारी की, इससे लक्ष्मी जी बहुत प्रसन्न हुईं और साहूकार के पास बहुत धन-दौलत हो गई। हे लक्ष्मी माता! जैसे तुम साहूकार की बेटी की चौकी पर बैठी और बहुत सा धन दिया, वैसे ही सबको देना।

पौराणिक व सांस्कृतिक स्वरूप क्या?

पं दीनदयाल मणि त्रिपाठी

दीपावली भारत के उस आदि स्वातंत्र्योत्सव का प्रतीक पर्व है, जब पहली बार विदेशियों के पदाक्रांत से आहत होने के बाद देश ने अपने पारतंत्र्य से मुक्ति पाई थी। हिरण्याक्ष से लेकर बलि तक की दैत्य परंपरा के अंत का पौराणिक इतिहास है। भारत को सर्वप्रथम आक्रांत करने वाली विदेशी जाति दैत्य जाति थी और वह वायव्य दिशा से आई थी। इसके नेता का नाम हिरण्याक्ष था। कदाचित भारत की संपत्ति - अर्थात हिरण्य, पर दृष्टि (अक्ष) रखने के कारण ही उसका नाम हिरण्याक्ष पड़ा होगा।

यह घटना उस अंधकारमय काल की है, जब आर्यावर्त की सीमाओं को पार कर आर्य जाति ने दक्षिणापथ की ओर बढ़ना शुरू कर दिया था। क्रमशः उत्तर व दक्षिण का सम्मिलन होकर भारत देश, भारत राष्ट्र और भारतीय संस्कृति के निर्माण कार्य का प्रारंभ हो गया था। हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद, विरोचन तथा बलि की कथाएं भारतीय पुराणों की एक मुख्य भाग हैं। उनमें भारत के पारतंत्र्य और उसे नष्ट कर पुनः स्थापित किए जाने वाले स्वातंत्र्य की गौरव-गाथा है।

ये सभी आक्रमणकर्ता दैत्य वंश के थे और बाहर से आए थे। भारत में इनकी जड़ जमाने वाला पहला व्यक्ति हिरण्याक्ष ही था। उसने वर्तमान खेबर के रास्ते अपनी सेना सहित भारत में प्रवेश किया था और पंजाब-कश्मीर तक अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी। इससे आगे बढ़ने में वह कदाचित सफल नहीं हो सका था। परंतु जितने भी भूभाग में वह अपना वर्चस्व स्थापित करने में समर्थ हुआ, उस अंचल में उसने ऐसा भयंकर उत्पात मचाया कि देश के मनीषियों को लगने लगा, जैसे पृथ्वी सहसा ही डूब कर रसातल को चली जाएगी। पुराणों में ऐसा ही रूपात्मक वर्णन हमें प्राप्त होता है। जैसा कि नाम से ही प्रकट है, हिरण्याक्ष मुख्यतः एक लुटेरा था। मगर लूटमार के लिए अत्याचार, रक्तपात या अग्निकांड की भी जरूरत होती है। यह सब उसने इतने व्यापक पैमाने पर किया कि समस्त देश में त्राहि-त्राहि मच गई।

हिरण्याक्ष के अत्याचारों से देश को मुक्त कराने का बीड़ा उठाकर, जो व्यक्ति सर्वप्रथम खड़ा हुआ, उसका नाम वराह था। वराह एक प्रतीक नाम है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह मनुष्य न होकर सूकर यानी सूअर था। सूअर के नेतृत्व में हिरण्याक्ष के वध का आंदोलन संपन्न किया गया। सच्चाई यह रही होगी कि इस व्यक्ति ने हिरण्याक्ष को नष्ट करने के लिए जिस प्रकार के लोगों तथा जिस पद्धति से उनका संगठन किया, वह वराह के गुणों से मिलती-जुलती होगी। वराह में बुद्धि नहीं होती, वह शक्तिशाली होते हैं, झपट कर हमला करते हैं, लेकिन स्वच्छता और संयम से कोसों दूर रहते हैं।

वराह और उसकी सेना के लोग भी ऐसे ही रहे होंगे। उनमें स्पष्ट ही नीति, न्याय और निष्ठा जैसे बातों का अभाव रहा होगा।

इन सब दोषों के बावजूद अपनी उस सेना को लेकर वराह ने हिरण्याक्ष पर हमला किया। दोनों के बीच युद्ध हुआ और अंत में हिरण्याक्ष की सेना को नष्ट कर वराह ने हिरण्याक्ष को भी मार डाला। जिस स्थान पर यह घटनाएं हुईं, उसका नाम वराहमूलम पड़ा।

आज तक वह स्थान कश्मीर में बारामूला के नाम से प्रसिद्ध है। संभव है कि यह हिरण्याक्ष की राजधानी रही हो, वराह ने वहीं पर हमला करके उसे नष्ट किया हो और इस महान घटना की याद में ही वराह के नाम पर उसका नामकरण हुआ हो। हिरण्याक्ष के भाई का नाम हिरण्यकशिपु था। अपने भाई के राज्य को हस्तगत कर, उस काल के मूल स्थान और आज के मुलतान में उसने अपनी राजधानी स्थापित की। किसी समय मुलतान का नाम प्रह्लादपुरी था। वहां प्रह्लाद का मंदिर आज भी है।

दैत्य वंश की इस परंपरा में हिरण्यकशिपु ही ऐसा था, जिसने विधि पूर्वक किसी नगर को अपनी राजधानी बनाया, राज्य व्यवस्था स्थापित की और शासन का कारोबार चलाया। हिरण्याक्ष तो मुख्यतः लुटेरा ही था, जो स्थान-स्थान पर अपने केंद्र बना कर आसपास के राज्यों पर आक्रमण करता था। हिरण्यकशिपु ने कुशलता पूर्वक अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया। रात में या दिन में, घर में या बाहर, मानव या पशु कोई भी उसे मारने में समर्थ नहीं था। अस्त्र-शस्त्र उसे घायल नहीं कर सकते थे। यह हिरण्यकशिपु के शासन और सैन्य व्यवस्था की ही सुदृढ़ता तथा दक्षता थी, जिसमें किसी भी प्रकार से उसका नाश करना असंभव था। उसे इतनी सुरक्षा इसलिए रखनी पड़ती थी कि वह एक विदेशी शासक था और सेना के बल पर ही शासन करने में उसे सफलता प्राप्त हो सकती थी।

प्रह्लाद हिरण्यकशिपु का बेटा था। यह बात आश्चर्यजनक प्रतीत होती है, परंतु सत्य है कि बेटे ने ही अपने पिता के अत्याचार को समाप्त करने का प्रयत्न किया। इसका कारण यह था कि प्रह्लाद भारतीय संस्कृति से प्रेम करने लगा था। उसे पसंद नहीं था कि उसका पिता उसे नष्ट कर उसके स्थान पर भौतिकवादी ईश्वरविहीन संस्कृति की स्थापना करे। परंतु तब भी प्रह्लाद विदेशी शासन से भारत को मुक्ति दिलाना नहीं चाहता था, क्योंकि वह स्वयं भी उसी वंश तथा रक्त का था। मात्र भारतीय धर्म-संस्कृति की सुरक्षा के लिए वह प्रयत्नशील था और बचपन से ही उसने अपने अंतर की यह भावना अत्यंत तीव्ररूप से व्यक्त करनी आरंभ कर दी थी। हिरण्यकशिपु ने पहले तो समझा-बुझाकर पुत्र को अपने रास्ते पर लाने की चेष्टा की। अपने मंतव्य में जब वह विफल हुआ, तब उसने प्रह्लाद के प्रति क्रूरता का व्यवहार आरंभ कर दिया। उसे आग में जलाया, पहाड़ से गिराया, परंतु तब भी प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हो पाया।

इन सब रूपक-कथाओं से उन कष्ट कर यंत्रणाओं की झलक मिलती है, जो प्रह्लाद को दी गईं। प्रह्लाद को आग में जलाने से संबंधित घटना तो होली के साथ जुड़ी हुई है। इसी कारण राज्य के सभी मूलवासी प्रह्लाद से बहुत प्यार करने लगे थे। एक दिन हिरण्यकशिपु ने क्रोधित होकर अपने प्रासाद के एक खंभे की ओर इशारा करते हुए प्रह्लाद से पूछा था कि क्या तेरा ईश्वर इस खंभे में भी है?

प्रह्लाद ने अपने पिता के इस प्रश्न का जब स्वीकारात्मक उत्तर दिया, तो हिरण्यकशिपु ने उस खंभे पर भीषण प्रहार किया। पुराण कहता है कि उस खंभे में से नृसिंह रूपधारी भगवान ने बाहर निकल कर हिरण्यकशिपु का वध कर डाला। वराह की ही तरह नृसिंह भी एक प्रतीक नाम है। इसका तात्पर्य यह कि नर सिंह का रूप धारण कर प्रकट हुआ। वास्तविकता यह रही होगी कि राज्य के लोग प्रह्लाद से प्रेम करने के कारण हिरण्यकशिपु के घोर विरोधी हो गए होंगे और उन्होंने क्रोधित होकर हिरण्यकशिपु को मार डाला होगा। जनता का यह रोष सिंह की भांति प्रकट हुआ। बगैर किसी पूर्व संगठन अथवा आयोजन यह घटना सर्वथा आकस्मिक रूप से घटी और क्षणमात्र में उत्पन्न क्रोध से उबल कर जनता ने हिरण्यकशिपु का वध कर डाला। इसी कारण सिंह से उसकी उपमा भी दी गई है।

हिरण्यकशिपु के बाद प्रह्लाद ने किया शासन

प्रह्लाद के राज्य में यद्यपि धर्म और संस्कृति की स्वतंत्रता हमें प्राप्त हो गई, परंतु देश विदेशी-बंधन से मुक्त नहीं हो पाया। जैसा हम देख चुके हैं, नृसिंहावतार में कोई संगठन अथवा योजना नहीं थी और नृसिंह कदाचित किसी व्यक्ति विशेष का नाम भी नहीं था। इस कारण नृसिंहावतार के बाद भी भारत विदेशियों के ही अधीनस्थ रहा। प्रह्लाद अत्यंत बुद्धिमान व नीतिज्ञ शासक था।

यदि पश्चिमवर्ती इतिहास में उसकी तुलना का कोई शासक ढूढ़ना हो, तब कनिष्क प्रह्लाद के समान था, यह कहा जा सकता है। कनिष्क विदेशी होते हुए भी भारतीय धर्म को मानने वाला था और उसकी परंपरा के सभी राजाओं ने भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग प्रकट किया था। इसी तरह प्रह्लाद की नीति कुशलता की किसी परवर्ती राजा से तुलना करनी हो तो काफी हद तक अकबर से की जा सकती है। अपनी उदार शासन व्यवस्था से उसने भारतीयों के हृदयों को जीतने का सफल प्रयत्न किया। कहते हैं, न्याय तथा निष्पक्षता की रक्षा के लिए उसने अपने बेटे तक के विरुद्ध एक बार निर्णय दिया था।

प्रह्लाद का पुत्र था, विरोचन और विरोचन का पुत्र हुआ बलि। विरोचन अपने पिता की नीतियों से प्रसन्न नहीं था, इसलिए वह उसके जीवनकाल में ही राज्य छोड़ कर अन्यत्र चला गया था। वस्तुतः विरोचन प्रह्लाद की ईश्वरभक्ति का विरोधी था और उसने नास्तिकवाद का प्रचार किया। भारतीय वाङ्मय में वह नास्तिकतावाद के एक प्रमुख आचार्य के रूप में गिना जाता है।

विरोचन के पुत्र बलि ने पुनः दैत्य वंश की परंपरा स्थापित की और साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया। उसने न हिरण्यकशिपु की रीति-नीति अपनाई और न ही प्रह्लाद के आदर्शों को स्वीकार किया। उसने उन दोनों के मध्य का रास्ता अपनाया और भारतीयजनों का विश्वासभाजन बन कर, उन्हें अपने शासन में बनाए रखने का काम शुरू किया। उसने बड़े-बड़े यज्ञ किए, जिससे लोगों ने उसे भारतीय संस्कृति का प्रेमी समझना शुरू कर दिया। उसने ऐसी शासन-व्यवस्था स्थापित की, जिसमें जन सामान्य को किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव न हो। अत्याचार करना तो उसने मूलरूप से ही बंद कर दिया। लोग उसे अपना सच्चा हितैषी समझने लगे,

लेकिन देश के मनीषियों ने इस परिस्थिति को भली-भांति समझ कर, विदेशी साम्राज्य को अंतिम रूप से समाप्त करने के प्रयत्न आरंभ कर दिए। पौराणिक कथाओं से ज्ञात होता है कि देवमाता अदिति ने इस उद्देश्य को पूर्ण करने के निमित्त तपस्या प्रारंभ कर दी। उन्होंने भगवान से एक श्रेष्ठ पुत्र का वरदान मांगा और इस वरदान के फलस्वरूप वामन का जन्म हुआ। कहते हैं कि स्वतरू श्री भगवान ही वामन के रूप में अवतरित हुए थे। वराह व नृसिंह की भांति ही वामन भी एक प्रतीकात्मक नाम है। छोटे शरीर के लोग फुरतीले होते हैं, उनकी बुद्धि पैनी होती है तथा उनकी अपेक्षाएं-आवश्यकताएं भी न्यूनतम हाती हैं। अदिति के पुत्र में यह सब गुण थे, इसलिए उन्हें

गणेश की पूजा दीपावली में भी श्रीलक्ष्मी के साथ अनिवार्य रूप से किए जाने का विधान है। कार्तिकेय की पूजा विजयादशमी के अवसर पर दुर्गा की मूर्ति के साथ स्थापित कर उन्हें पूजा जाता है। गणेश शुभ और लाभ के देवता के रूप में पूजित, उपासित हैं। गणेश प्रारंभ को कहते हैं, और प्रारंभ में केवल ईश्वर रहता है। गणेश के पूजन का अभिप्राय है -गणो गणो अस्ती। गनेभ्यो नमःअस्त -गति नमः। वेद वचन है- गनेभ्यो नमः।

गणपति से प्रारंभ है!

वेद में शिव, गणेश आदि का नाम व पूजा का आदेश सदैव रहने वाले अशरीरी शिव, गणेश आदि से ही अभिप्रेत है, न कि बाद में शरीरधारी हुए किसी शिव, गणेश नामक व्यक्ति से। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में गणेश व गणपति शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है – (गण संख्याने) इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है, इसके आगे ईश वा पति शब्द रखने से गणेश और गणपति शब्द सिद्ध होते हैं। ये प्रकृत्यादयो जडा जीवाश्च गण्यन्ते संख्यायन्ते तेषामीशः स्वामी पतिः पालको वा स गणेशो गणपतिर्वा ईश्वरः। जो प्रकृत्यादि जड़ और सब जीव प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करनेहारा है, इससे उस ईश्वर का नाम गणेश वा गणपति है।

■ अशोक "प्रवृद्ध"

गणेश, गणपति संज्ञा का विरूपण वेद मंत्रों में भी हुआ है। यजुर्वेद 23/19 में कहा गया है-

ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे,
प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे, निधीनां
त्वा निधिपतिं हवामहे।
वसोः मम आहमजानि गर्भधम
त्वमजासि गर्भधम्।।- यजुर्वेद 23/19

अर्थात- जो प्रकृति आदि जड़ और सब जीव प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम गणेश या गणपति है।

यजुर्वेद 23/19 और वेद में अंकित मंत्र किसी शरीरधारी गणेश के लिए नहीं है, बल्कि निराकार ईश्वर के लिए है। वेद में ईश्वर को सूर्य भी कहा गया है। सूर्य को जगत की आत्मा कहा है। जो जगत नाम प्राणी, चेतन और जंगम अर्थात जो चलते-फिरते हैं, अप्राणी अर्थात स्थावर जड़ अर्थात पृथ्वी आदि हैं, उन सब के आत्मा होने और स्वप्रकाशरूप सब के प्रकाश करने से परमेश्वर का नाम सूर्य है। सूर्य से ज्यादा तेज, प्रभावशाली केवल एक निराकार ईश्वर ही हो सकता है।

वास्तव में गणेश उसको कहते हैं जो गनेती हो। गनेती करने वाला हो। जो अयुक्त रहने वाला हो अर्थात जो किसी से जुड़ा हुआ नहीं हो अर्थात जिसको न राग हो न द्वेष हो। जिसकी सूंघने की शक्ति अधिक हो। अर्थात जो सब गंध सुगंध को अपने में धारण करने वाला हो, उसको गनेभ्यो कहते हैं। परमात्मा सबसे बड़ा गणपति माना गया है। परमात्मा संसार की सुगंध को अपने में धारण करता रहता है। वर्तमान में गणेश का सिर हाथी क्वे सिर के समान प्रदर्शित किया जाना विवेकपूर्ण है। गणेश प्रारंभ को कहते हैं, और प्रारंभ में केवल ईश्वर रहता है। इसलिए ईश्वर का पूजन होता है। किसी भी पूजा अथवा शुभ कार्य के समय गणपति का पूजन होता है। गणेश के पूजन का अभिप्राय है -गणो गणो अस्ती। गनेभ्यो नमःअस्त -गति नमः। वेद वचन है- गनेभ्यो नमः।

पौराणिक वर्णनों में शिव- पार्वती पुत्र गणेश की उत्पति, प्रथम पूज्य होने, उनके सिरोछेदन, उनके अनेक नाम, महिमा, उपासना के विशद वर्णन अंकित हैं। उनके जन्म दिन गणेश चतुर्थी पर साज -सजावट युक्त भव्य पंडालों में उनकी प्रतिमा स्थापन कर धूमधाम से उनकी पूजा -अर्चना की जाती है। यह उत्सव दस दिन चलता है उसके बाद अनंत चतुर्दशी को गणपति के भांति- भांति के नारों के साथ गणेश की प्रतिमा को नदी जलाशयों में विसर्जित कर दिया जाता है। दक्षिण में शिव पार्वती के साथ गणेश और उनके अग्रज भ्राता कार्तिकेय की पूजा भी बड़े उत्साह के साथ की जाती है। गणेश की पूजा दीपावली में भी श्रीलक्ष्मी के साथ अनिवार्य रूप से किए जाने का विधान है। कार्तिकेय की पूजा विजयादशमी के अवसर पर दुर्गा की मूर्ति के साथ स्थापित कर उन्हें पूजा जाता है।

गणेश शुभ और लाभ के देवता के रूप में पूजित, उपासित हैं। जिस प्रकार शिव के अनेक पर्याय व नाम हैं, उसी प्रकार श्रीगणेश की भी अनेक नामों से चर्चा हुई है। ऋग्वेद संहिता में गणेश की स्तुति करते हुए कहा है कि हे ब्रम्हणस्पति अर्थात वाणी के स्वामी, आप देवों में गणपति और आपका अन्न सर्वोच्च और अमानभूत है। आप प्रशंसनीय लोगों में राजा और मंत्रों के स्वामी हो। हम तुम्हें बुलाते हैं। आप हमारी स्तुति सुनकर आश्रय प्रदान करने के लिए यज्ञ ग्रह में बैठो। वर्तमान में लोग सभी दिशाओं में भ्रमण करने वाले, सूंघने की प्रबल शक्ति से युक्त हाथी की सूंड की भांति विशाल सभी प्राणियों और प्रकृति पर चहुं ओर ध्यान देने वाले असीमित शक्ति वाले ईश्वर गणपति के स्वरूप की स्तुति करते हुए कण-कण में व्याप्त, लोक- लोकांतरों में विद्यमान अकल्पनीय आकार वाला महाकाय करोड़ों सूर्य की भांति प्रभाकान्ति वाले ईश्वर गणपति से सारे कार्य विना विघ्न के पूरे करने की कृपा करने की प्रार्थना करते हुए नहीं थकते हैं।

प्रार्थना, कामना है महालक्ष्मी आएं!

हाल की सदियों में दीपावली ऐश्वर्य, सौभाग्य, समृद्धि और वैभव की अधिष्ठात्री देवी श्री महालक्ष्मी की आराधना, उपासना और स्तुति का पर्व बन गया है। दीपोत्सव के इस गौरवमयी पर्व में असंख्य दीपों की रोशनी में विष्णुप्रिया महालक्ष्मी का आह्वान किया जाता है। और अद्वितीय सौन्दर्य एवं आरोग्य की दाता श्री महालक्ष्मी के आगमन की कामना की जाती है।

भारत में प्राचीन काल से कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन स्वर्णमयी लक्ष्मी देवी की आराधना- उपासना की परिपाटी है। कार्तिक अमावस्या की तिथि को इसलिए आवाहन किया जाता है क्योंकि मान्यता है कि जिनके आगे घोड़े तथा पीछे रथ रहते हैं, जो हस्तिनाद को सुनकर प्रमुदित होती हैं, उन श्रीदेवी को प्रणाम कर उनका आवाहन करते हुए उनसे लक्ष्मी देवी की प्राप्ति के लिए प्रार्थना कार्तिक अमावस्या की रात्रि में ही हो। लोग इस दिन कमल के आसन पर विराजमान लक्ष्मीदेवी की प्रार्थना करें। ताकि घर से सभी प्रकार के दारिद्रय और अमंगल दूर हो।

ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के अंत में अंकित ऋग्वेद के खिल सूक्त श्रीसूक्त के मंत्र वर्तमान में देवी लक्ष्मी की आराधना करने हेतु प्रयुक्त होते हैं। इस सूक्त का पाठ धन-धान्य की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है। इसे लक्ष्मी सूक्तम् भी कहा जाता है। श्रीसूक्त में मंत्रों की संख्या पंद्रह है। सोलहवें मंत्र में फलश्रुति है। बाद में ग्यारह मंत्र परिशिष्ट के रूप में अंकित हैं। श्रीसूक्त के चार ऋषि हैं- आनन्द, कर्दम, श्रीद और चिक्लीत। ये चारों श्री के पुत्र बताए गए हैं। श्रीपुत्र हिरण्यगर्भ को भी श्रीसूक्त का ऋषि माना जाता है। श्रीसूक्त का चौथा मंत्र बृहती छंद में, पांचवाँ और छटा मंत्र त्रिष्टुप छंद और अंतिम मंत्र का छंद प्रस्तारपंक्ति है। शेष मंत्र अनुष्टुप छंद में है। श्री

शब्दवाच्या लक्ष्मी इस सूक्त की देवता हैं। महर्षि बोधायन, वशिष्ठ आदि के द्वारा बतलाये गए विशेष प्रयोग के अनुसार श्रीसूक्त का विनियोग लक्ष्मी के आराधन, जप, होम आदि में किया जाता है। श्रीसूक्त की फलश्रुति में भी इस सूक्त के मंत्रों का जप तथा इन मंत्रों के द्वारा होम करने का निर्देश किया गया है। आराधनाक्रम में श्रीसूक्त के पंद्रह मंत्रों का इस क्रम से विनियोग किया जाता है- आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नेवेद्य, प्रदक्षिणा, उद्वासन। श्रीसूक्त के मंत्रों का विषय -भगवान से लक्ष्मी को अभिमुख करने, लक्ष्मी को अभिमुख रखने की प्रार्थना, लक्ष्मी से सान्निध्य के लिए प्रार्थना, लक्ष्मी का आवाहन, लक्ष्मी की शरणागति एवं अलक्ष्मीनाश की प्रार्थना, अलक्ष्मी और उसके सहचारियों के नाश की प्रार्थना, मांगल्यप्राप्ति की प्रार्थना, अलक्ष्मी और उसके कार्यों का विवरण देकर उसके नाश की प्रार्थना, लक्ष्मी का आवाहन, मन, वाणी आदि की अमोघता तथा समृद्धि की स्थिरता के लिए प्रार्थना, कर्दम प्रजापति से प्रार्थना, लक्ष्मी के परिकर से प्रार्थना, लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिए पुनः भगवान से प्रार्थना, पुनः लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिए भगवान से प्रार्थना, भगवान से लक्ष्मी के आभिमुख्य की प्रार्थना और फलश्रुति आदि हैं।

लक्ष्मी सूक्त परिशिष्ट के मंत्रों के विषय हैं- सौख्य की याचना, समस्त कामनाओं की पूर्ति की याचना, सान्निध्य की याचना, समृद्धि के स्थायित्व के लिए प्रार्थना, देवताओं में लक्ष्मी के वैभव का विस्तार, सोम की याचना, मनोविकारों का निषेध, लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए प्रार्थना, लक्ष्मी की वंदना, लक्ष्मीगायत्री और अभ्युदय के लिए प्रार्थना।

श्रीसूक्त के पंद्रह मंत्रों में श्रीदेवी अर्थात श्री लक्ष्मी के निम्न नाम अंकित हैं- हिरण्यवर्णा, हरिणी, सुवर्णरजतस्रजा, चन्द्रा, हिरण्मयी, लक्ष्मी, अनपगामिनी, अश्वपूर्वा, रथमध्या, हस्तिनादप्रयोधिनी, श्री, देवी, का, सोस्मिता, हिरण्यप्राकारा, आर्द्रा, ज्वलन्ती, तृप्ता, तर्पयन्ती, पद्मे स्थिता, पद्मवर्णा, प्रभासा, यशसा ज्वलन्ती, देवजुष्टा, उदारा, पद्मनेमि, आदित्यवर्णा, गन्धद्वारा, दुराधर्षा, नित्यपुष्टा, करीषिणी, ईश्वरी, माता, पद्ममालिनी, पुष्करिणी, यष्टि, पिंगला, पुष्टि, सुवर्णा, हेममालिनी, सूर्या। परिशिष्ट के ग्यारह मंत्रों में श्रीलक्ष्मी के निम्न नाम अंकित हैं- पद्मानना, पद्मोरू, पद्माक्षी, पद्मसम्भवा, अश्वदायी, गोदायी, धनदायी, महाधना, पद्मविपद्मपत्रा, पद्मप्रिया, पद्मदलायताक्षी, विश्वप्रिया, विश्वमनोनुकूला, सरसिजनिलया, सरोजहस्ता, धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभा, भगवती, हरिवल्लभा, मनोज्ञा, त्रिभुवनभूतिकारी, विष्णुपत्नी, क्षमा, माधवी, माधवप्रिया, प्रियसखी, अच्युत वल्लभा, महादेवी, विष्णुपत्नी।

बहरहाल, स्त्री देवता देवी के रूप में इनका पहला प्राकट्य ऋग्वेद के खिल सूक्त में श्रीसूक्तं अर्थात लक्ष्मी सूक्तं के रूप में ही दिखाई देता है। इसमें श्री लक्ष्मी की महिमा गान की गई है। वर्तमान में यह सूक्त लक्ष्मी पूजन का सर्वप्रचलित सूक्त बन गया है। इस सर्वाधिक प्राचीन श्रीसूक्त की ऐसी महिमा है कि वर्तमान में लक्ष्मी सबसे अधिक पूजनीय है। कालांतर में लक्ष्मी उपासना विभिन्न धार्मिक शाखाओं में शक्ति प्राप्त की। और लक्ष्मी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई। वर्तमान में दीपावली प्रचुर ऐश्वर्य, सौभाग्य, समृद्धि और वैभव की अधिष्ठात्री देवी श्री महालक्ष्मी की आराधना, उपासना और स्तुति का पर्व बन गया है। दीपोत्सव के इस गौरवमयी पर्व में असंख्य दीपों की रोशनी में विष्णुप्रिया महालक्ष्मी का आह्वान किया जाता है। और अद्वितीय सौन्दर्य एवं आरोग्य की दाता श्री महालक्ष्मी के आगमन की कामना की जाती है।

विकसित मध्यप्रदेश और सांस्कृतिक पुनर्जागरण

■ मोहन यादव

भोपाल ■

मध्यप्रदेश के नये स्वरूप की यात्रा को 68 वर्ष बीत चुके हैं। इस यात्रा में लगभग दो दशक पूर्व तक प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी में था। विकास के निरंतर प्रयास से प्रदेश प्रगति पथ पर आगे बढ़ा। विगत दस वर्षों से यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में प्रदेश ने विकास की करवट ली और प्रदेश विकसित राज्य की ओर अग्रसर है। अब हमने जनसेवा, सुशासन और प्रदेश के चहुंमुखी विकास की नयी यात्रा आरंभ की है। प्रदेशवासियों के साथ मिलकर प्रदेश को देश में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में कार्य किये जा रहे हैं।

भारत का हृदय, अपना मध्यप्रदेश वन, जल, अन्न, खनिज, शिल्प, कला, संस्कृति, उत्सव और परंपराओं से समृद्ध है। पुण्य सलिला माँ नर्मदा का सान्निध्य और भगवान महाकालेश्वर का आशीर्वाद हमें प्राप्त है। यह असंख्य वीरों, बलिदानियों और राष्ट्र संस्कृति के प्रति समर्पित महान विभूतियों की धरती है। यह भगवान परशुराम की जन्मस्थली, भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली और आदि शंकराचार्य की तपोस्थली है। यहां गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती ने स्वत्व के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया था।राष्ट्र में अपने सांस्कृतिक गौरव को पुनर्स्थापित करने वाली पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की कर्मस्थली है।उनके त्रिशताब्दी समारोह के आयोजन वर्ष में कई कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि मध्यप्रदेश को प्राकृतिक संपदा के आधार के साथ इतिहास का गौरव प्राप्त है। अब हम विकास के साथ विरासत को लेकर आगे बढ़ेंगे।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए विकसित भारत निर्माण का संकल्प दिया है। इस संकल्प की सिद्धि के लिये उन्होंने ज्ञान (GYAN), गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान का नया सूत्र (वाक्य) दिया। ये चार वर्ग विकास के आधार स्तम्भ हैं। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में प्रदेश विकास और कल्याण के लिये युवा शक्ति, गरीब कल्याण, किसान कल्याण और नारी सशक्तिकरण मिशन के तहत कार्य करने जा रहे हैं।

युवा शक्ति मिशन शिक्षा, कौशल विकास, रोज़गार, उद्यमिता, नेतृत्व विकास, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्य की योजना बनाकर मिशन मोड में कार्य करेगा। युवाओं को स्वरोज़गार से जोड़ने के साथ हमने शासकीय नौकरियों में एक लाख से अधिक युवाओं के भर्ती का अभियान शुरू कर दिया है। मध्यप्रदेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने वाला देश का पहला राज्य है। प्रदेश के 55 जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का शुभारंभ, कुलपतियों को कुलगुरु का मान, शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण और योग ध्यान पाठ्यक्रम का समावेश किया गया है। युवा शक्ति मिशन में युवाओं के विकास और निर्माण के सभी कार्य संभव होंगे।

गरीब कल्याण मिशन स्वरोज़गार तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधा आदि की दिशा में कार्य करेगा। नारी शक्ति मिशन के तहत बालिका शिक्षा, लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना, लखपति दीदी योजना, महिला स्व-सहायता समूहों के सशक्तिकरण आदि कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ किये जायेंगे।किसान कल्याण मिशन में कृषि और उद्यानिकी को लाभ का व्यवसाय बनाने की दिशा में कार्य होंगे। किसानों को राहत प्रदान करने के साथ कृषि की उपज बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास किये जायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प को पूरा करने में इन चारों मिशन की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

हमारा प्रयत्न है कि मध्यप्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र के विशिष्ट उत्पादों के अनुरूप उद्योग स्थापित हों। इसके लिए हमने रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, सागर और रीवा में आयोजन किया। हैदराबाद, कोयंबटूर तथा मुंबई में रोड शो और उद्योगपतियों को निवेश के लिये प्रदेश में आमंत्रित करना उद्योग विस्तार का उपक्रम है। इससे विपुल क्षेत्रीय स्थानीय उत्पाद के अनुसार उद्योग स्थापना का क्रम आरंभ होगा और औद्योगिक विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन आयेगा।

मेरा संकल्प है कि प्रदेश की धरती पर कभी जल का संकट न आए इसका एक-एक कोना जल से सिंचित हो। इसके लिए हमने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में केन-बेतवा और पार्वती-काली-सिंध चंबल नदी लिंक परियोजना ओंपर तेजी से कार्य आरंभ कर दिया है। इस अभियान में सदानीरा नदियों के जल को मौसमी नदियों के साथ जोड़ने से हमारे अन्नदाता किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मिलेगा,पेयजल की समस्या समाप्त

डबल इंजन की सरकार में आ

■ सुरेश पचौरी

भोपाल ■

हम मध्यप्रदेश का 69 वां स्थापना दिवस मना रहे हैं। भारत का हृदय कहा जाने वाला मध्यप्रदेश 1 नवम्बर 1956 को अस्तित्व में आया, जिसका गठन तत्कालीन मध्यभारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल रियासत तथा महाकोशल के कुछ हिस्से को एकीकृत कर किया गया था। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर तथा झीलों की नगरी कहे जाने वाले भोपाल को प्रदेश की राजधानी बनाया गया। 44 वर्षों के बाद प्रदेश का विभाजन हुआ और जनता की मांग पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा नए राज्य छत्तीसगढ़ का गठन किया गया। अतीत पर नजर डाली जाए तो मध्यप्रदेश ने अपने गठन और विभाजन के दौर में अनेक उतार- चढ़ाव देखे हैं लेकिन अब यह राज्य प्रगति के नये सोपान नाप रहा है। डबल इंजन की सरकार इस राज्य की तस्वीर और तकदीर बदलने की दिशा में शिद्दत से लगी हुई है। प्रदेश की जनता की खुशहाली और समरस विकास के लिए तमाम जनहितैषी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जो इस बात की गवाह हैं कि मध्यप्रदेश आने वाले दिनों में सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहेगा। इस विकासोन्मुखी अभियान में जहां एक ओर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सुस्पष्ट व दूरगामी सोच है, वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश सरकार की प्रदेशवासियों की सेवा करने की प्रतिबद्धता है।

मध्यप्रदेश के इतिहास, भूगोल और संस्कृति पर है तो ओरछा में राम राजा विराजमान हैं। चित्रकूट की महिमा तो अवर्णनीय हैं। यहीं गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान श्री राम के दर्शन किए थे। क्षिप्रा के तट पर संदीपनी आश्रम में श्रीकृष्ण और उनके सखा सुदामा ने शिक्षा प्राप्त की थी। राजा विक्रमादित्य, महाकवि कालिदास, राजा भोज एवं संत सिंगाजी की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि होने का सौभाग्य मध्यप्रदेश को ही प्राप्त है। साँची में विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप हैं तो सोनागिरी में प्रसिद्ध जैन मंदिर। खजुराहो में तो पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं।

दरअसल, मध्यप्रदेश जितना विस्तृत है, उतना ही ऐतिहासिक भी है। चंद्रशेखर आजाद के शौर्य, रानी दुर्गावती के बलिदान, टाट्या मामा की शहादत, छत्रसाल बुंदेला के पराक्रम, देवी अहिल्या के सुशासन को मध्यप्रदेश की विरासत के रूप में रेखांकित किया जाता है। संगीत सम्राट तानसेन तथा उस्ताद अलाउद्दीन खां तो संगीत के क्षेत्र की अनमोल धरोहर हैं। न जानें कितने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की कुर्बानी प्रदेश के कोने-कोने में आज भी जीवंत है।

नर्मदा, सोन, चंबल, बेतवा, केन, ताप्ती, पेंच, पार्वती, बेनगंगा, रेवा तथा माही आदि नदियों के उद्गम स्थल यहीं पर हैं। ये नदियां प्रदेश की चारों दिशाओं में प्रवाहित होती हैं। नर्मदा को तो मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी माना जाता है। प्रदेश के एक तिहाई भूभाग के निवासियों को नर्मदा आर्थिक रूप से संपन्न बनाती है। नर्मदा नदी पर निर्मित सरदार

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशा-निर्देशन में म.प्र. तेजी से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं के क्रियान्वयन और उनका लाभ पात्र हितग्राहियों को दिलाने में म.प्र. देश में लगातार अग्रणी बना हुआ है। पीएम स्वनिधि योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पीएम आवास योजना, कृषि अवसंरचना निधि, प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना, पीएम स्वामित्व योजना, नशामुक्त भारत अभियान, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, राष्ट्रीय आजीविका मिशन और स्वच्छ भारत मिशन आदि योजनाओं के क्रियान्वयन में म.प्र. देश में सबसे आगे है।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में मध्यप्रदेश में 8 लाख 20 हजार 575 आवास बनाए जा चुके हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में प्रदेश में 36 लाख 25 हजार 20 आवासों का निर्माण किया जा

योगेश्वर भगवान कृष्ण ने द्वापर में अन्न के कूट (पर्वत) खड़े करके अपने युग की अन्न संवर्धन क्रान्ति का अभिनव सूत्रपात किया

अनूप सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर । गोवर्धन पूजा और अन्नकूट पर्व पर आयोजित एक परिचर्चा को संबोधित करते हुए नेहरू महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो. भगवत नारायण शर्मा ने कहा कि हल को धारण करने वाले भगवान श्री कृष्ण के भैय्या बलराम ने द्वापर में संसार की पहली ऐसी कृषि क्रान्ति की कि हल की नोंक के सहारे किसानों ने अन्न के ऐसे पहाड़ खड़े कर दिए कि कोई भी अन्न के अभाव में भूख से न मर सके । दूसरी ओर गोवर्धन अर्थात गौओं की बढ़ोत्तरी इतनी अधिकता से कराई कि कोई भी कंस या दुर्योधन जैसे कुशासक घी , दूध की नदियों के प्रवाह को अंतिम व्यक्ति तक पहुँचने से नहीं रोक सके । पूतनाओं के कुचक्रों को पूर्णावतार श्रीकृष्ण ने अपने पालने में ही जड़ -मूल से मिटा दिया ।देश की आम जनता जो कृषि और गौ पालन पर आधारित थी उन करोड़ो-करोड़ निर्बलों के बल सच्चे अर्थों में बलराम बन गए ।

देवराज इंद्र होंगे आसमानी देवता उनसे क्या लेना -देना -ऐसी सीख बालक होते हुए भी अपनी माता यशोदा को उन्होंने सिखायी और कहा कि जिस गोवर्धन पर्वत के साए में गौएँ चरा करती हैं , पहाड़ से निकलने वाले झरनों का शीतल जल पीतीं हैं , श्रीकृष्ण की बंशी की तान सुनकर अमृततुल्य दुग्ध में वृद्धि करतीं हैं ,जो किसान हल को धारण करके खेत की कठोर मिट्टी को रैन-बेसन की तरह फेंट देती है । वास्तव में ये सारी प्रकृति और मनुष्य ही उस अगोचर ब्रह्म के चलते फिरते साक्षात् ईश्वर है जिनकी पूजा हमें करनी चाहिए ।धन्य है अपने देश की वह पावन मिट्टी जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के पावन चरण अंकित हुए । हम आज भी द्वापर युग की परम्परा को पूरा करते हुए गोवर्धन पूजा और अन्नकूट अर्थात अन्न के पहाड़ खड़े करके किसी को भी भूख से मरने नहीं देना चाहते हैं परंतु समसामयिक युग में जो हरित क्रांति और दूध- दही -मक्खन की श्वेत क्रांति लहलहाकर देश में पल्लवित हुई थी उससे इतना उत्पादन बड़ा कि -अकेला पंजाब सारे देश को गेहूँ और चावल खिला सकता है और बुंदेलखंड का सबसे छोटा जिला ललितपुर मात्र कार्तिक में पैदा होने वाली उर्द की दाल से डेढ़ अरब देशवासियों की थाली को लबालब कर सकता है । किन्तु समस्या अन्न और घी -दूध के उत्पादन की नहीं है जितनी उपभोक्ता के मुँह से निवाले को दूर करने वाले सिस्टम की उस कुव्यवस्था से है जिसके कारण हम कौरवों और कंसों के नए संस्करणों को पहचानने की अर्जुन दृष्टि खोते चले जा रहे हैं क्योंकि हमारा निशाना सही जगह पर नहीं पड़ रहा है । वस्तुत- योगेश्वर भगवान कृष्ण ने द्वापर में बलि की कुप्रथा के स्थान पर अन्न के कूट (पर्वत) खड़े करके अपने युग की अन्न संवर्धन क्रान्ति का अभिनव सूत्रपात किया ।

पत्रकार उमाकान्त शर्मा-मिठाई विक्रेता शासन के आदेशों की उड़ा रहे धज्जियां

मिठाइयों को खुले में रखकर की जा रही बिक्री कई बीमारियों को दे रहे दावत

भिंडाशहर में दीपावली का त्यौहार आते ही मिठाइयों के दुकानदारों के द्वारा मिठाइयों की जगह जगह फैक्ट्री सी खोल दी गई है जिनके द्वारा शासन के नियमों की सरेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है बस स्टैंड से लेकर अटेर रोड तक मिठाइयों की फैक्ट्री सी खोल दी गई है चाहे वो संतोषी माता के सामने शर्मा मिष्ठान भंडार हो या चाहे वो अटेर रोड बघेल मिष्ठान भंडार, हरि सिंह मिष्ठान भंडार, जोधपुर मिष्ठान भंडार, माँ वैष्णो मिष्ठान भंडार, बाबा स्वीट मिष्ठान भंडार, जैसे से कई मिष्ठान भंडारों के द्वारा सरेआम शासन के आदेशों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं शासन के तरफ से दिए गए निर्देशों का कतई पालन नहीं किया जा रहा है सड़क से उड़ती हुई धूल

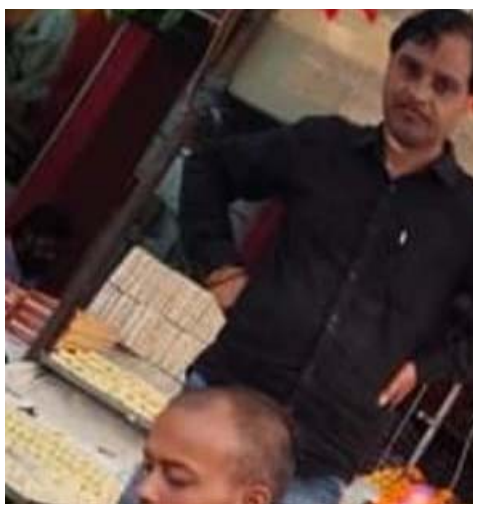

को आम लोगो को परोसा जा रहा है मिठाइयों को खुले में रख कर बिक्री की जा रही हैं खुले में रखी मिठाइयों पर सड़क से निकलने वाली गाड़ियों से उड़ती हुई धूल भी मिठाइयों पर पड़ रही है कई जगह पास में बने नालों से निकलने बाली गंदी गंदी मक्खिया एवं उड़ने वाले कीड़े मिठाइयों पर बैठकर बीमारियों को दावत दे सकते है मगर मिठाइयों के दुकानदारों पर इसका कोई असर पड़ता नहीं दिख रहा इस तरह खुले में मिठाइयों को बेचने वाले दुकानदारों पर फूड अधिकारियों को शक्त से सख्त कार्रवाई करनी चाहिए जिससे शासन के आदेशों का पालन किया जा सके एवं आम लोगो पर इसका गलत असर पड़ने से बचे

कौमी एकता सेवा समिति द्वारा किया गया राहत सामग्री का वितरण

त्यौहारों पर खुशियां बांटने का सिलसिला आगे भी रहेगा जारी - परवेज

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर। जनपद में सामाजिक सेवा में सदैव आगे रहने वाली सामाजिक संस्था कौमी एकता सेवा समिति रजि. द्वारा समय-समय पर अनेक सामाजिक कार्य किए जाते रहे हैं। उसी क्रम को जारी रखते हुए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली त्यौहार के मौके पर जरूरतमंद परिवारों को राहत सामग्री का वितरण किया गया। राहत सामग्री पाकर लोगों के चेहरे खिल उठे, मानो त्यौहार पर कोई फरिश्ता उनके बीच आकर भेंट दे गया हो। परिवारों द्वारा समिति के सदस्यों का शुक्रिया उन्हें दुआएं देकर किया गया। समिति अध्यक्ष परवेज पठान व अन्य सदस्यों द्वारा कहा गया कि सामग्री व अन्य मदद का सिलसिला आगे भी जारी रहेगा, जरूरतमंद परिवारों के खिले चेहरे देखकर एक अलग ही खुशी का अहसास होता है। हमें इंसान होकर इंसानियत के नाते हर उस जरूरतमंद की मदद करनी चाहिए जो परेशान है। यह जरूरी नहीं कि हम किसी की मदद अकेले ही करें, क्योंकि हो सकता है अकेला व्यक्ति सक्षम नहीं हो कि वह अकेले मदद कर सके। इसलिए संगठन बनाकर सभी लोगों को थोड़ा-थोड़ा सहयोग करके मदद के लिए आगे आना चाहिए। जिससे इंसानियत कायम रहे। मुख्य अतिथि सदर क्षेत्राधिकारी अभय नारायण राय ने समिति के सदस्यों की सराहना करते हुए कहा सामाजिक सेवा करना पुण्य का कार्य है। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में समिति के संरक्षक डॉ राजकुमार जैन ने भी अपनी बात रखी। इस दौरान मुख्य अतिथि सदर क्षेत्राधिकारी अभय नारायण राय, विशिष्ट अतिथि डा.राजकुमार जैन, समिति अध्यक्ष परवेज पठान रहे। संचालन समिति संरक्षक लक्ष्मी नारायण विश्वकर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर अजय जैन अज्जू, डा.तेजस्व श्रीवास्तव, आयुष सैनी, कलम सोनी, सोनू, मकबूल राइन, राजेश झा, शिवम साहू, अजय प्रजापति आदि उपस्थित रहे

डीएम की जल संरक्षण की पहल हो रही साकार 29 में से 7 जल स्रोतों के पुनरुद्धार का कार्य प्रगति पर

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर। जनपद में जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी की जल संरक्षण एवं प्राचीन जल स्रोतों के पुनर्जीवन की पहल निरंतर अग्रसर हो रही है, जिसके अंतर्गत जनपद के प्राचीन कुओं एवं बावडियों के पुनर्जीवन/पुनरुद्धार का कार्य चल रहा है। जिलाधिकारी के निर्देश पर नगर पालिका द्वारा नगर क्षेत्र में 29 जल स्रोतों को पुनरोद्धार हेतु चिन्हित किया गया है, जिनमे 26 कुंए व 3 प्राचीन बावडियां शामिल है। इनमें से 5 कुओं और 2 बावडियों के पुनरुद्धार हेतु नगर पालिका द्वारा टेंडर निकालकर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। इसके अलावा डीएम ने एक नई पहल और शुरू की है, जिसके अंतर्गत नगर क्षेत्र में निवासी कोई भी व्यक्ति अपने आसपास स्थित सार्वजनिक कुंए या बावड़ी का पुनरुद्धार करना चाहता हो तो वह उसकी सूचना नगर पालिका परिषद ललितपुर में दे सकता है। इसी के क्रम में जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी ने 29 अक्टूबर को नारायणपुर स्थित कांशीराम कालोनी के पास पुराने कुएं एवं वार्ड नंबर 6 में चौहान बावड़ी का निरीक्षण किया। मौके पर कुंए में काम चल रहा था, जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि कार्य पूरी गुणवत्ता एवं पारदर्शिता के साथ होना चाहिए, इसमें कोई भी लापरवाही ना हो। उन्होंने मोहल्ले वासियों से भी वार्ता की और कहा कि नगर क्षेत्र में कोई भी सार्वजनिक हुआ या बावड़ी जिसका पुनरुद्धार किया जाना हो उसकी सूचना नगर पालिका में उपलब्ध करा दे। मौके पर डीसी मनरेगा रमेश कुमार यादव, ईओ दिनेश विश्वकर्मा, खंड विकास अधिकारी सौरव बरनवाल व अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

चोरी का खुलासा, दुकान का नौकर व उसका दोस्त निकले चोर

अनुज सिंह ठाकुर पुष्पांजलि टुडे ब्यूरो रिपोर्ट

ललितपुर। कोतवाली सदर के सामने स्थित साहू कम्प्यूटर्स की दुकान से नकदी व दो लैपटॉप चोरी होने के मामले में कोतवाली पुलिस ने खुलासा कर दिया है। चोरी करने वाले दुकान के ही दो कर्मचारी निकले, जिन्होंने नीयत में खोट आने के चलते दुकान में रखे 45 हजार रुपये की नकदी व दो लैपटॉप चोरी किये थे। बताया गया है कि विगत दिनों सुनील साहू ने पुलिस को तहरीर देकर दुकान में चोरी होने की सूचना दर्ज करायी थी। प्रकरण में एसपी मो.मुश्ताक के निर्देशन, एएसपी अनिल कुमार व सीओ सदर के निकट पर्यवेक्षण में कोतवाली पुलिस ने जांच के दौरान ग्राम पनारी में रहने वाले सौरभ कुशवाहा पुत्र राजकुमार व प्रवेश अहिरवार

पुत्र संजीव कुशवाहा को गोविन्द सागर बांध के पूंछा से हिरासत में लिया है। पूछताछ में अभियुक्त प्रवेश ने बताया कि उसका दोस्त सौरभ साहू साहू कम्प्यूटर्स पर काम करता था। यहां 28 अक्टूबर को दुकान में रुपये रखने होने की सौरभ को भनक लगी, जिस पर सौरभ ने बोर्ड के नीचे रखी चाबी उठा ली और रात में दुकान का ताला खोलकर उसके गल्ले में रखे 45 हजार रुपये नकद और दो लैपटॉप भी उठा लिये। लैपटॉप बेचकर वह अपने साथ सौरभ साहू के साथ मिलकर रुपये आधे-आधे बांटने वाले थे। यह चोरी उन्होंने अपने शौंक व जरूरतें पूरी करने के लिए की। चोरी का खुलासा करने वाली पुलिस टीम में उप निरीक्षक प्रशान्त राणा, उप निरीक्षक अनिल बाबू, हे.कां.राघवेन्द्र पाल, कां.संदीप पाल, कां.देवेन्द्र कुमार आदि शामिल रहे।

मोटर साइकिल समेत दबोचा गया बदमाश

पुष्पांजलि टुडे ब्यूरो रिपोर्ट अनुज सिंह ठाकुर

ललितपुर। एसपी मो.मुश्ताक के निर्देशन व एएसपी अनिल कुमार और सीओ सदर के निकट पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कोतवाली पुलिस ने पंजीकृत मामला धारा 303(2), 317(2) बीएनएस में वांछित ग्राम बिरारी निवासी बहादुर पुत्र प्रागीलाल को शहनाज नदी पुल के पास से चोरी की मोटर साइकिल संख्या यू.पी. 94 आर 6466, हीरो एच.एफ. डीलक्स के साथ पकड़ा गया है। इस सम्बन्ध में बताया है कि गांव में रहने वाला बहादुर पाल की सीसीटीवी फुटेज में मोटर साइकिल चोरी करते हुये फुटेज दर्ज हुयी थी। इसी के आधार पर कोतवाली पुलिस ने बहादुर को धर दबोचा। बदमाश को पकडने वाली टीम में उप निरीक्षक मानवेन्द्र सिंह परमार, कां.अनिल कुमार व कां.नरेश शामिल रहे।

ढ़ाबा पर खाना खा रहे युवक की बाइक चोरी

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर। ग्राम बिरारी निवासी रोहित कुशवाहा पुत्र स्व.रामसिंह ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि बीती 28 अक्टूबर को शाम करीब 6.30 बजे वह गांव के बाहर स्थित सत्यम ढ़ाबा पर खाना खा रहा था। उसने अपनी मोटर साइकिल संख्या यू.पी.94 आर 6466 जो कि उसकी पत्नी राधा के नाम से पंजीकृत है को ढ़ाबा के बाहर खड़ा कर दिया था। लौटकर आकर देखने पर उसकी मोटर साइकिल मौके पर नहीं थी। रोहित ने बताया कि उसने बाइक की काफी खोजबीन की, लेकिन पता नहीं चला। उसने बताया कि जितेन्द्र, नन्दराम, दिनेश व राहुल से जानकारी हुयी कि बिरारी गांव में देहरे के पास रहने वाले बहादुर पुत्र प्रागीलाल उसकी मोटर साइकिल ले गया था, जो कि जुआरी किस्म का व्यक्ति है। रोहित कुशवाहा की तहरीर पर पुलिस ने धारा 303 (2) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

पति पर पल्सर न मिलने पर प्रताड़ना का आरोप

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर। निकटवर्ती ग्राम सिलगन निवासी पूजा पुत्री परमाल सिंह ने चौकी दैलवारा में पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी शादी 12 वर्ष पहले थाना तालबेहट अन्तर्गत ग्राम रामपुर निवासी मंगल सिंह के साथ हुयी थी। शादी के बाद उसे दो बच्चे रितिक राजा व सूर्यांश हैं। बताया कि शादी के बाद से उसके पति द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है। आये दिन शराब पीकर उत्पात मचाते हुये गालियां देकर मारपीट कर दी जाती है। महिला ने यह भी आरोप लगाया कि उसके पति द्वारा शादी में पल्सर मोटर साइकिल न मिलने का उलाहना देते हुये उसे घर से निकाल दिया, जिस कारण वह अपने मायके में निवासरत है। इतना ही नहीं पुलिस कार्यवाही करने पर आत्महत्या करने की धमकी भी पति मंगल सिंह द्वारा दी जाती है। महिला की तहरीर पर पुलिस ने मंगल सिंह के खिलाफ बीएनएस की धारा 85, 115 (2), 352, 351 (2) के तहत मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

जिले में गुणवत्तापूर्ण हो खेल मैदानों का निर्माण

कल्लू सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे

ललितपुर। जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी ने ग्राम पंचायतों में चल रहे मनरेगा खेल के मैदानों एवं पार्क का औचक निरीक्षण किया गया है। निरीक्षण के समय ग्राम मसौराकलां प्रधान प्रतिनिधि उमेश तिवारी, ग्राम प्रधान सिलावन नितिन कुमार, ग्राम सचिव नीरज निरंजन, तकनीकी सहायक आशीष कुमार, तकनीकी सहायक अरविन्द कुमार, एपीओ मनरेगा उमेश चन्द्र झा, बीडीओ कौशल कुमार गुप्ता, बीडीओ सौरभ कुमार बर्नवाल एवं उपायुक्त श्रम-रोजगार रमेश कुमार यादव मौजूद रहे। ग्राम पंचायत मसौराकलां में मनरेगा योजनांतर्गत निर्मित कराये जा रहे खेल का मैदान जो कि 1 एकड 90 डेसी में निर्मित कराया जा रहा है जिसकी लागत मु. 39.60 लाख रू. है। ग्राम निधि से यूटीलिटि बनाये जाने एवं खेल के मैदान के किनारे किनारे वृक्षारोपण कराते हुये माह जनवरी तक पूर्ण कराये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। ग्राम पंचायत मिर्चवारा खेल का मैदान-खेल के मैदान लगभग पूर्ण है केवल कच्चा ट्रैक बनाते हुये 15 दिवस में पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये गये है। इसी ग्राम पंचायत में मनरेगा पार्क बनाये जाने के निर्देश दिये गये है। ग्राम पंचायत सिलावन- मनरेगा योजनांतर्गत निर्मित कराये जा रहे खेल के मैदान मिनी स्टेडियम में कच्चा ट्रैक, क्रिकेट पिच बनाये जाने हेतु क्रिकेट कोच के दिशा निर्देशों में पिच इत्यादि बनायी जाये एवं मैदान के किनारे किनारे वृक्षारोपण एवं वैठने हेतु सीढ़ीनुमा कराते हुये इसे जनवरी माह तक पूर्ण कराया जाय एवं इसमें क्रिकेट टूर्नामेंट कराये जाये। इसी प्रकार जनपद में 111 खेल के मैदान खेल मैदान बनाये जाने का लक्ष्य है जिसमें विकास खण्ड बार में 17, बिरधा 20, जखौरा 23 मडावरा 15 महरौनी 20 तालवेहट 16 पर कार्य प्रारम्भ कराये गये है। जिसमें प्रत्येक विकास खण्ड में एक एक मिनी स्टेडियम की तरह विकसित किये जाये। उक्त खेल के मैदान लगभग 22.00 करोड की लागत से कार्य कराये जायेगे जिसकी धनराशि मनरेगा, ग्राम निधि, क्षेत्र पंचायत एवं बुन्देलखण्ड विकास निधि से व्यय किया जायेगा। मनरेगा पार्क जनपद में 52 स्थलों का चयन किया गया है विकास खण्ड बार में 5 बिरधा में 18 जखौरा में 10 मडावरा में 8 महरौनी में 6 एवं तालवेहट में 5 जिसके सापेक्ष वर्तमान में 20 पर कार्य प्रगति पर है अवशेष कार्यो को एक सप्ताह में प्रारम्भ करते हुये माह जनवरी तक पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये गये है। उक्त पार्कों में ग्राम निधि एवं मनरेगा से धनराशि लगभग मु. 6 करोड़ 24 लाख रू.व्यय किया जायेगा।

सिरसौद सरपच की 72 घटे बाद भूख हड़ताल खत्म spने दिया जांच का आश्वासन

पत्रकार सतीश परिहार

शिवपुरी मे सिरसौद के सरपंच का गुरुवार को 72 घंटे का अंनशन खत्म हुआ । सरपंच अतर सिह लोधी ने अमोला थाना प्रभारी को हटाने की मांग को लेकर भूख हड़ताल की थी सरपंच ने थाना प्रभारी राजकुमार चाहर पर बदसलूकी का आरोप लगाया है। इस दौरान पूर्व विधायक जसवंत जाटव करेरा एसडीएम अजय शर्मा और एसडीओपी शिव नारायण मुकाती के साथ सरपंच को मनाने के लिए पहुंचे थे

ये है मामला-तीन दिन पहले अमोला पुलिस ने अबैध शराब के मामले में ग्रामीण मनी राम लोधी के खिलाफ

करवाई करते हुए उसके ट्रैक्टर ट्रॉली को जप्त किया था सरपंच अतर सिह लोधी ने थाने में जाकर थाना प्रभारी को बताया कि मनीराम का शराब के धंधे से कोई संबंध नहीं है लेकिन उनकी बात को नजरअंदाज कर दिया गया सरपंच ने आरोप लगाया कि थाना प्रभारी में उन्हें बदसलू की कर थाने से भगा दिया इसके बाद उन्होंने **अमोला थाना प्रभारी को हड़ताल शुरू करने का निर्णय लिया**-29 अक्टूबर को सरपंच और स्थानीय ग्रामीणों ने अमोला थाना प्रभारी को हटाने की मांग को लेकर सिर्फ स्वच्छ मेरी मार्ग पर चक्का जाम किया हालाकि पिछोर बिधायक प्रीतम लोधी के हसतक्षेप से जाम खुलबा दिया गया लेकिन सरपच ने अपना अनशन जारी रखा गुरुवार को पूर्व विधायक जसवंत जाटब , करेरा एसडीएम अजय शर्मा, और एसडीओपी शिव नारायण मुकाती सरपच से मिलने पहुचे । जसवंत जाटव ने पुलिश अधीक्षक अमन सिंह राठौड़ से बात की । उन्होंने मामले की जांच का आश्वासन दिया इसके बाद सरपंच ने अपनी भुखहडताल समाप्त कर दी

वैसली नदी में नहाते समय डूबने से हुई युवक की मौत पुलिस ने कराया पोस्टमार्टम

दैनिक पुष्पांजलि टुडे

गोहद अनुभाग के अंतर्गत रूरी का पुरा गांव में एक युवक की वैसली नदी में नहाते समय डूबने से मौत हो गई ।जानकारी के अनुसार मानसिंह पुत्र मंगल सिंह जाटव उम्र लगभग 35 वर्ष निवासी रूरी का पुरा गुजरात में कलर पेंट आदि का कार्य करके अपने परिवार का भरण पोषण करता था जो कि गोहद के ग्राम पंचायत कठवां हाजी के रूरी का पुरा में अपने घर दीपावली का त्योहार मनाने आया था और अपने खेतों पर अपनी पत्नी एवं बच्चे के साथ पहुंचा जहां बाजरे की फसल कट रही थी ।युवक अपने खेत पर पेड़ के नीचे पत्नी के साथ बैठा हुआ था तभी लगभग 1 बजे वैसली नदी में नहाने के लिए चला गया और नदी में नहाते समय ही उसका पैर फिसल गया और नदी में डूब गया घटना देखकर पत्नी चिल्लाई तो आसपास खेतों में काम कर रहे लोगों ने दौड़कर नदी में कूद गए और युवक की तलाश शुरू कर दी वही ग्रामीणों ने घटना की सूचना गोहद पुलिस को दी एवं ग्रामीणों को दी सूचना लगते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई लगभग 2 घंटे की मशक्कत के बाद युवक का शव नदी में डूबा हुआ मिला जिसे गोहद अस्पताल ले गए जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया पुलिस ने मर्ग कायम कर शव का पोस्टमार्टम कराया और शव परिजनों को सौंपा ।घटना की सूचना जैसे ही विधायक केशव देसाई को लगी तो वह भी गोहद अस्पताल में पहुंचे और सभी परिजनों को समझाइश देते हुए उचित कार्रवाई हेतु अधिकारियों को निर्देशित करने की बात कही। मृतक अपने पीछे पत्नी दो बेटी एवं एक बेटा छोड़कर गया है।जिनका रो-रो कर बुरा हाल है।

दो बाईकों की आमने-सामने से हुई जोरदार भिड़ंत चालकों की दर्दनाक मौत

पत्रकार सतीश परिहार

शिवपुरी जिले के अमोला थाना क्षेत्र के अंतर्गत अमोल पठा रोड पर दो बाइकों की भीषण भिड़ंत में दोनों चालकों की मौत हो गई सूचना के बाद अमोला पुलिस करेरा के स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंची थी यहां डॉक्टरों ने दोनों की मौत की पुष्टि की पुलिस ने दोनों शवों का पोस्टमार्टम कराकर मामले की जांच शुरू कर दी हैजानकारी के मुताबिक रामपुरा गांव का रहने वाला संजय आदिवासी 25 वर्ष और राजगढ़ गांव का रहने वाला बालवीर आदिवासी अलग-अलग बाइक पर सवार होकर जा रहे थे दोनों की बाइक गुरुवार की शाम अमल पत्थर रोड पर आमने-सामने से टकरा गई टक्कर इतनी जबरदस्ती की बाइक सवारों की दम टूट गई घटना में दोनों बाइक सवारों ने मौके पर दम तोड़ दिया

उत्तर और मध्य भारत में यह पर्व भातृ द्वितीया भैयादूज के नाम से जाना जाता है, पूर्व में भाई-कोटा, पश्चिम में भाईबीज और भाऊबीज कहलाता है।

भैयादूजः बहन के हाथ का भोजन करें

यम द्वितीया का पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया अर्थात कार्तिक महीने के उजियारे पाख के दूसरे दिन मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल चंद्र दर्शन की परंपरा है और जिसके लिए भी संभव होता है, जो यमुना नदी के जल में स्नान करते हैं। स्नानादि से निवृत्त होकर दोपहर में बहन के घर जाकर वस्त्र और द्रव्य आदि द्वारा बहन का सम्मान किया जाता है और वहीं भोजन किया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से कल्याण या समृद्धि प्राप्त होती है।

बदलते हुए समय को देखें, तो यह व्यस्त जीवन में दो परिवारों को मिलने और साथ समय बिताने का सर्वोत्तम उपाय है। ऐसा कहा गया है कि यदि अपनी सगी बहन न हो तो पिता के भाई की कन्या, मामा, मौसी अथवा बुआ की बेटी भी बहन मानी गई हैं, इनके हाथ का बना भोजन करें। जो पुरुष यमद्वितीया को बहन के हाथ का भोजन करता है, उसे धन, आयुष्य, धर्म, अर्थ और अपरिमित सुख की प्राप्ति होती है। यम द्वितीय के दिन सायंकाल घर में बत्ती जलाने से पूर्व, घर के बाहर चार बत्तियों से युक्त दीपक जला कर दीप-दान करने का नियम भी है।

उत्तर और मध्य भारत में यह पर्व भातृ द्वितीया भैयादूज के नाम से जाना जाता है, पूर्व में भाई-कोटा, पश्चिम में भाईबीज और भाऊबीज कहलाता है। इस पर्व पर बहनें प्रायः गोबर से मांडना बनाती हैं, उसमें चावल और हल्दी के चित्र बनाती हैं। इसके बाद सुपारी, फल, पान, रोली, धूप, मिष्ठान आदि रखती हैं और दीप जलाती हैं। इस दिन यम द्वितीया की कथा भी सुनी जाती है।

भैयादूज की कथा-

सूर्य भगवान की स्त्री का नाम संज्ञा देवी था। इनकी दो संतानें, पुत्र यमराज तथा कन्या यमुना थीं। संज्ञा देवी पति सूर्य की उद्दीप्त किरणों को न सह सकने के कारण उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बन कर रहने लगीं। उसी छाया से तापी नदी तथा शनीचर का जन्म हुआ। इधर छाया का यम तथा यमुना से विमाता सा व्यवहार होने लगा। इससे खिन्न होकर यम ने अपनी एक नई नगरी यमपुरी बसाई, यमपुरी में पापियों को दंड देने का कार्य संपादित करते भाई को देख कर यमुना जी गोलोक चली आईं जो कि कृष्णावतार के समय भी थी।

यमुना अपने भाई यमराज से बड़ा स्नेह करती थी। वह उससे बराबर निवेदन करती कि वह उसके घर आकर भोजन करें। यमराज अपने काम में व्यस्त रहने के कारण यमुना की बात को टाल जाते थे। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर एक दिन सहसा यम को अपनी बहन की याद आई। उन्होंने दूतों को भेज कर यमुना की खोज करवाई, मगर वह मिल न सकीं। फिर यमराज स्वयं ही गोलोक गए, जहां विश्राम घाट पर यमुनाजी से भेंट हुई। भाई को देखते ही यमुनाजी ने हर्ष विभोर होकर उनका स्वागत सत्कार किया तथा उन्हें भोजन करवाया। इससे प्रसन्न हो यम ने वर मांगने को कहा। यमुना ने कहा- हे भैया मैं आपसे यह वरदान मांगना चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी यमपुरी न जाएं।

प्रश्न बड़ा कठिन था, यम के ऐसा वर देने से यमपुरी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता। भाई को असमंजस में देख कर यमुना बोलीं- आप चिंता न करें, मुझे यह वरदान दें कि जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करके, इस मथुरा नगरी स्थित विश्राम घाट पर स्नान करें वे तुम्हारे लोक को न जाएं। इसे यमराज ने स्वीकार कर लिया। उन्होंने बहन यमुनाजी को आश्वासन दिया कि इस तिथि को जो सज्जन अपनी बहन के घर भोजन नहीं करेंगे, उन्हें मैं बांध कर यमपुरी ले जाऊंगा और तुम्हारे जल में स्नान करने वालों को स्वर्ग होगा। तभी से भाईदूज का त्योहार मनाया जाता है।

चित्रगुप्त की पूजा

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को कायस्थ समाज के आराध्य देव चित्रगुप्त की पूजा की जाती है। परमपिता ब्रह्मा जी के अंश से उत्पन्न हुए भगवान चित्रगुप्त यमराज के सहयोगी हैं। चित्रगुप्त कुशल लेखक हैं और इनकी लेखनी से जीवों को उनके कर्मों के अनुसार न्याय मिलता है। इसलिए इस पूजा को कलम-दवात पूजा भी कहा जाता है। स्वर्ग में धर्मराज का लेखा-जोखा रखने वाले चित्रगुप्त की पूजा चित्रवंशियों के लिए सबसे बड़ी पूजा है। कायस्थ लोग सामूहिक रूप से तस्वीरों अथवा मूर्तियों के माध्यम से करते हैं। ये इस दिन कारोबारी बहीखातों और अपनी कलम की पूजा करते हैं।

धर्मग्रंथों के अनुसार, सृष्टि के निर्माण के उद्देश्य से जब भगवान विष्णु ने अपनी योग माया से सृष्टि की कल्पना की, तो उनकी नाभि से एक कमल निकला, जिस पर एक पुरुष आसीन था, चूंकि इनकी उत्पत्ति ब्रह्माण्ड की रचना और सृष्टि के निर्माण के उद्देश्य से हुई थी, अतः ये ब्रह्मा कहलाए। इन्होंने सृष्टि की रचना के क्रम में देव-असुर, गंधर्व, अप्सरा, स्त्री-पुरुष पशु-पक्षी को जन्म दिया। इसी क्रम में यमराज का भी जन्म हुआ, जिन्हें धर्मराज की संज्ञा प्राप्त हुई, क्योंकि धर्मानुसार उन्हें जीवों को सजा देने का कार्य प्राप्त हुआ था। धर्मराज ने जब एक योग्य सहयोगी की मांग ब्रह्मा जी से की तो ब्रह्मा जी ध्यान में लीन हो गए। एक हजार वर्ष की तपस्या के बाद एक पुरुष उत्पन्न हुआ। इस पुरुष का जन्म ब्रह्माजी की काया से हुआ था अतः ये कायस्थ कहलाए और इनका नाम चित्रगुप्त पड़ा। चित्रगुप्त के हाथों में कर्म की किताब, कलम, दवात और जल रहता है।

चित्रगुप्त महात्मय-

जो भी प्राणी धरती पर जन्म लेता है, उसकी मृत्यु निश्चित है, क्योंकि यही विधि का विधान है। विधि के इस विधान से स्वयं भगवान भी नहीं बच पाए और मृत्यु की गोद में उन्हें भी सोना पड़ा। चाहे भगवान राम हों, कृष्ण हों, बुध और जैन सभी को निश्चित समय पर पृथ्वी लोक आ त्याग करना पड़ता है। मृत्यु के उपरांत क्या होता है और जीवन से पहले क्या है, यह एक ऐसा रहस्य है, जिसे कोई नहीं सुलझा सकता है। हमारे वेद-पुराणों में लिखा और ऋषि मुनियों ने कहा है कि उसके अनुसार इस मृत्युलोक के ऊपर एक दिव्य लोक है, जहां न जीवन का हर्ष है और न मृत्यु का शोक वह लोक जीवन-मृत्यु से परे है। इसी प्रकार की बहुत सी बातें गरुड़ पुराण में वर्णित हैं।

यमराज के दरबार में उस जीवात्मा के कर्मों का लेखा-जोखा होता है। कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाले भगवान हैं चित्रगुप्त। यही भगवान चित्रगुप्त जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत जीवों के सभी कर्मों को अपनी पुस्तक में लिखते रहते हैं। जब जीवात्मा मृत्यु के पश्चात यमराज के सामने पहुंचता है तो उसके कर्मों को एक-एक कर सुनाते हैं और उन्हें अपने कर्मों के अनुसार, नर्क और स्वर्ग में भेज देते हैं।

पूजा विधि-

कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि को भगवान चित्रगुप्त की पूजा का विधान है। इस दिन भगवान चित्रगुप्त और यमराज की मूर्ति स्थापित करके अथवा उनकी तस्वीर रख कर श्रद्धा पूर्वक सभी प्रकार से फूल, अक्षत, कुमकुम, सिंदूर और भांति-भांति के पकवान, मिष्ठान और नैवेद्य सहित इनकी पूजा करें और फिर जाने-अनजाने हुए अपराधों के लिए इनसे क्षमा याचना करें। यमराज और चित्रगुप्त की पूजा और उनसे अपने बुरे कर्मों के लिए क्षमा मांगने से नरक का फल भोगना नहीं पड़ता है। इस संदर्भ में एक कथा का यहां उल्लेखनीय है।

व्रत कथा-

सौराष्ट्र में एक राजा हुआ, जिसका नाम सौदास था। राजा अधर्मी और पाप कर्म करने वाला था। इस राजा ने कभी पुण्य का काम नहीं किया था। एक बार शिकार खेलते समय जंगल में भटक गया। वहां उन्हें एक ब्राह्मण दिखा, जो पूजा कर रहे थे। राजा उत्सुकतावश ब्राह्मण के समीप गया और उनसे पूछा कि यहां आप किसकी पूजा कर रहे हैं। ब्राह्मण ने कहा, आज कार्तिक शुक्ल द्वितीया है, इस दिन मैं यमराज और चित्रगुप्त महाराज की पूजा कर रहा हूं। इनकी पूजा नरक से मुक्ति प्रदान करने वाली है। तब राजा ने पूजा का विधान पूछ कर वहीं चित्रगुप्त और यमराज की पूजा की। काल की गति से एक दिन यमदूत राजा के प्राण लेने आ गए। दूत राजा की आत्मा को जंजीरों में बांध कर घसीटते हुए ले गए। लहुलुहान राजा यमराज के दरबार में जब पहुंचा तो चित्रगुप्त ने राजा के कर्मों की पुस्तिका खोली और कहा कि हे यमराज! यूं तो यह राजा बड़ा ही पापी है। इसने सदा पाप कर्म ही किए हैं, परंतु इसने कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि को हमारा और आपका व्रत पूजन किया है। अतः इसके पाप कट गए हैं और अब इसे धर्मानुसार नरक नहीं भेजा जा सकता। इस प्रकार राजा को नरक से मुक्ति मिल गई।

चित्रगुप्त का विवाह- उज्जैन के अवंतीपुर जाकर चित्रगुप्त जी ने वर्षों तपस्या की। तपस्या से संतुष्ट होकर ब्रह्माजी देवताओं और ऋषियों के साथ चित्रगुप्त के पास पहुंचे और उनके यज्ञोपवीत व अन्य संस्कार कराए। सुषमा ऋषि की पुत्री एरावती उपनाम शोभावती और सिरा देव की पुत्री दक्षिणा उपनाम नंदिनी से चित्रगुप्त जी का विवाह हुआ। यह दोनों दो दैवीय शक्तियां मानी जाती हैं। शोभावती हर प्राणी के बाएं अंग में स्थित रहती है और प्राणी की नीयत को पहचानती हैं, जबकि नंदिनी दाएं अंग में स्थित रहती हैं और श्वासों का हिसाब रखती हैं। इन दोनों पत्नियों से चित्रगुप्त जी की बारह संतानें हुईं।

चित्रगुप्त के थे बारह पुत्र

नंदिनी के भानु, विभानु और वीर्यानु यह तीन पुत्र और शोभावती के चारु, सुचारु, चित्राख्य, मतिमान, हिमवान, चित्रचारु, अरुण और जितेंद्रिय आठ पुत्र हुए। इन्हें ही क्रमशः श्रीवास्तव, सूरध्वज, वाल्मीकि, अस्थाना, माथुर, गौड़, भटनागर, सक्सेना, अंबिष्ट, कर्ण, निगम और कुलश्रेष्ठ कहा जाता है। यह बारह पुत्र विभिन्न ऋषियों के साथ भिन्न-भिन्न दिशाओं में चले गए और चित्रगुप्त जी धर्मराज के दरबार में चले गए, तब से आज तक सृष्टि के सभी प्राणियों के कर्मों का लेखा-जोखा करना चित्रगुप्त जी का ही कार्य है। शिव पुराण और जपुजी साहब में भी उनके धर्म विचार का उल्लेख है। ब्रह्मा जी और तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं ने यज्ञोपवीत के समय ही श्री चित्रगुप्त जी को यह वरदान दिया कि यम द्वितीया वाले दिन उनके पूजन करने वाले को वैकुंठ की प्राप्ति होगी। तब से यम द्वितीया वाले दिन चित्रगुप्त और उनकी कलम दवात का पूजन किया जाता है।

कंहा होता है लक्ष्मी का वास?

संदीप कपूर

एक बार भगवान श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी अपनी अभिन्नरूपा लक्ष्मी से भेंट करने वैकुंठ पधारीं और वहां लक्ष्मी जी को भगवान विष्णु के समीप बैठी देखकर बड़ी प्रसन्न हुईं फिर लोक कल्याण के लिए रुक्मिणी जी ने देवी लक्ष्मी से पूछा, 'देवी, आप किस स्थान पर और कैसे मनुष्य के पास रहती हैं?'

लक्ष्मी ने उत्तर दिया, 'हे देवी जो मनुष्य मधुरभाषी, कार्यकुशल, क्रोधहीन, भक्त, कृतज्ञ, जितेंद्रीय और उदार हैं, उनके यहां मेरा निवास होता है। सदाचारी, धर्मज्ञ, बड़े-बूढ़ों की सेवा में तत्पर, पुण्यात्मा, क्षमाशील और बुद्धिमान मनुष्यों के पास मैं सदा रहती हूं। जो स्त्रियां पति की सेवा करती हैं, जिनमें क्षमा, सत्य, इंद्रियां संयम, सरलता आदि सद्गुण होते हैं, जो देवाओं और ब्राह्मणों में श्रद्धा रखती हैं, जिनमें सभी प्रकार के शुभ लक्षण मौजूद हैं, उनके समीप मैं निवास करती हूं। सवारी, कन्या, आभूषण, यज्ञ, जल से पूर्ण मेघ, हाथी, फूले हुए कमल, शरद ऋतु के नक्षत्र, गायों के रहने के स्थान, आसन, फूले हुए कमलों से सुशोभित

तालाब, मतवाले हाथी, सांड, राजा, सिंहासन, सज्जन पुरुष, विद्वान ब्राह्मण, प्रजापालक, क्षत्रिय, खेती करने वाले वैश्य तथा सेवापरायणन शूद्र मेरे प्रधान निवास स्थान हैं।

जिस घर में सदा होम होता है तथा देवता, गाय और ब्राह्मणों की पूजा होती है। उस घर को मैं कभी नहीं छोड़ती। भगवान नारायण के सिवाय अन्यत्र कहीं भी मैं शरीर धारण करके नहीं रहती। जहां मेरा वास होता है वहां धर्म, अर्थ और सुयश की बढ़ोत्तरी होती है।' लक्ष्मीजी एक पल रुककर बोलीं, 'अब उन स्थानों का वर्णन सुनो जिनसे मुझे घृणा है। जो अकर्मण्य, नास्तिक, कृतघ्न, आचार-भ्रष्ट, नृशंस, चोर, गुरुद्रोही तथा कपटी हैं और बल बुद्धि और वीर्य से हीन हैं, उनके पास मैं नहीं रहती। जो हर्ष और क्रोध का अवसर नहीं जानते, धन प्राप्ति की आशा नहीं रखते, मैं उनसे दूर रहती हूं। जो स्त्रियां गंदी रहती हैं, घर की वस्तुएं इधर-उधर बिखेरकर रखती हैं, जिनमें उत्तम विचार नहीं होते, जो सदा पति के प्रतिकूल बातें करती हैं, जिन्हें दूसरों के घरों में रहना ज्यादा पसंद है, जिनमें न धैर्य है, न लज्जा, जो स्वभाव से निर्दयी और शरीर से अपवित्र रहती हैं, जिनका कामकाज में दिल नहीं लगता, जो सदा लड़ाई-झगड़े किया करती हैं और अधिक सोती हैं, उनके पास मैं कभी नहीं रहती।'

इंद्र से भी दयालु गोवर्धन

अक्टूबर का महीना आते ही मौसम सुहाना होने लगता है। सावन के त्यौहारों के समाप्त होते ही दशहरा-दीवाली की धूम आरंभ हो जाती है। दशहरे के बाद बीस दिन दीवाली के स्वागत में कैसे बीत जाते हैं, शायद ही किसी को पता चलता हो। साफ-सफाई, घर में रंग-रोगन, मिठाइयां बनाने की होड़, कपड़े या फिर पटाखों की खरीदारी हो, सब कुछ दीपावली के स्वागत में हर साल होता आया है। खास बात यह है कि किसी भी साल इसमें कोई उत्साह की कमी नहीं होती, रौनक बढ़ती ही जाती है।

दीपावली का अगला दिन, कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को गोवर्धन पूजन, गौ-पूजन के साथ-साथ अन्नकूट पर्व भी मनाया जाता है। इस दिन सुबह ही नहा धोकर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर अपने इष्टों का ध्यान करते हैं। इसके पश्चात अपने घर या फिर देव स्थान के मुख्य द्वार के सामने गोबर से गोवर्धन बनाना शुरू किया जाता है। इसे छोटे पेड़, वृक्ष की शाखाएं और पुष्प से सजाया जाता है। पूजन करते समय यह श्लोक कहा जाता है, गोवर्धन धराधार गोकुल त्राणकारक। विष्णुबाहु कृतोच्छाय गवां कोटिप्रदो भव।

यह गोवर्धन पूजा का दिन (प्रतिपदा) साल में साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक माना जाता है। किसी भी काम की शुभ शुरुआत इस दिन की जा सकती है। आर्थिक दृष्टि से व्यापारी इस दिन से साल की नई शुरुआत मानते हैं। लक्ष्मी प्राप्ति की कामना करते हुए हिसाब-किताबों की हल्दी, कुमकुम, फूल अर्पण कर पूजा की जाती है। इस शुभ दिन से नई कापियों में हिसाब लिखना शुरू किया जाता है। गोवर्धन पर्वत की पूजा के बारे में एक कहानी कही जाती है। भगवान कृष्ण अपने सखा और गोप-ग्वालों के साथ गाएं चराते हुए गोवर्धन पर्वत पर पहुंचे, तो देखा कि वहां गोपियां 56 प्रकार के भोजन रख कर बड़े उत्साह से नाच-गाकर उत्सव मना रही हैं। श्रीकृष्ण के पूछने पर उन्होंने बताया कि आज वृत्रासुर को मारने वाले तथा मेघों व देवों के स्वामी इंद्र का पूजन होता है। इसे इंद्रोज यज्ञ कहते हैं। इससे प्रसन्न हो कर ब्रज में वर्षा होती है, अन्न पैदा होता है।

श्रीकृष्ण ने कहा कि इंद्र में क्या शक्ति है, उससे अधिक शक्तिशाली और दयालु तो हमारा गोवर्धन पर्वत है। इसके कारण वर्षा

काफी विवाद के बाद श्रीकृष्ण की यह बात मानी गई और ब्रज में इंद्र के स्थान पर गोवर्धन की पूजा की तैयारियां शुरू हो गईं। सभी गोप-ग्वाल अपने अपने घरों से पकवान लाकर गोवर्धन की तराई में श्रीकृष्ण द्वारा बताई विधि से पूजन करने लगे। श्रीकृष्ण द्वारा सभी पकवान चखने पर ब्रजवासी खुद को धन्य समझने लगे। नारद मुनि भी यहां इंद्रोज यज्ञ देखने पहुंच गए थे। इंद्रोज बंद कर के बलवान गोवर्धन की पूजा ब्रजवासी कर रहे हैं। यह बात इंद्र तक नारद मुनि द्वारा पहुंच गई और इंद्र को नारद मुनि ने यह कहकर और डरा भी दिया कि उनके राज्य पर आक्रमण करके इंद्रासन पर भी अधिकार शायद श्रीकृष्ण कर लें। इंद्र गुस्से में लाल पीले होने लगे। उन्होंने में मूसलाधार बरसात होने लगी। बाल-ग्वाल भयभीत हो उठे। श्रीकृष्ण की शरण में पहुंचते ही उन्होंने सभी को गोवर्धन पर्वत की शरण में चलने को कहा। वही सब की रक्षा करेंगे। जब सब गोवर्धन पर्वत की तराई में पहुंचे तो श्रीकृष्ण ने गोवर्धन को अपनी कनिष्ठा अंगुली पर उठाकर छाते-सा तान दिया और सभी की मूसलाधार हो रही वृष्टि से बचाया। सुदर्शन चक्र के प्रभाव से ब्रजवासियों पर एक बूंद भी जल नहीं गिरा। यह चमत्कार देख कर इंद्रदेव को अपनी की हुई गलती पर पश्चाताप हुआ और वे श्रीकृष्ण से क्षमा याचना करने लगे। सात दिन बाद श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत नीचे रखा और ब्रजवासियों को प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा और अन्नकूट का पर्व मनाने

गोवर्धन पूजा के साथ साथ गो-पूजन की भी तैयारी आरम्भ हो जाती है। सुबह होते ही गायों को नहलाना-धुलाना, उन्हें विभिन्न अलंकारों से सजाना। कभी-कभी उनके मेहंदी भी लगा दी जाती है। उनका श्रृंगार होने के बाद उनकी गंध, अक्षत और फूल अर्पण कर पूजन किया जाता है। उनके पैर धो कर उनकी प्रदक्षिणा ली जाती है। लक्ष्मीर्यां लोक पालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु। कहकर नैवेद्य अर्पित करते हैं। नैवेद्य में मिष्ठान का अहम स्थान होता है, जो गायों को खिलाया जाता है। सायंकाल को इन पूजित गायों से पूजित गोवर्धन पर्वत का मर्दन कराना अच्छा माना जाता है। इस गोबर से घर-आंगन को लीपा जाना शुभ होता है।

गाय मानव को अपना सर्वस्व देती है, उसका दूध, गोबर और गोमूत्र तक पूरी तरह उपयुक्त है। इसे खेतों में जोता भी जाता है। ऐसी हमारे लिए महत्वपूर्ण गाय का उपकार मानते हुए उसके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए, इस भावना से गो पूजन किया जाता है।

अन्नकूट महोत्सव

भगवान विष्णु अथवा उनके अवतार और अपने इष्ट देवता का इस दिन विभिन्न प्रकार के पकवान बना कर, रंगोली मांडकर, बहुरंगी सजा कर, पके हुए चावलों को पर्वताकार अर्पित कर के पूजन किया जाता है। इसे छप्पन भोग की संज्ञा भी दी गई है। तरह-तरह के चावल के साथ गेहूं के पकवान, विभिन्न सब्जियां रखी जाती हैं। दूध और मावे की मिठाइयां, जलेबी, लड्डू आदि तैयार किए जाते हैं। साथ ही विभिन्न फलों को भोग में सम्मिलित किया जाता है। फिर इष्ट मित्र व स्वजनों, अतिथियों के साथ इस महाप्रसाद को भोजन के रूप में ग्रहण किया जाता है। पौराणिक दृष्टि से चूंकि कृष्ण ने इंद्र का मान-मर्दन किया था। अतः इंद्र के स्थान पर कृष्ण के पूजन का विशेष महत्व है। कहते हैं कि इस पर्व का अनुष्ठान करने से भोग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह दिन पवित्र होने के बावजूद इस दिन चंद्र-दर्शन निषेध माना गया है। लोगों का विश्वास है कि इस दिन शाम को मार्गपाली और राजा बलि की पूजा करने तथा मार्गपाली के बंदनवार के नीचे होकर निकलने से सभी प्रकार की सुख-शांति रहती

सौभाग्य कि मेरा जन्म मप्र के स्थापना दिवस को हुआ- मंत्री डा. शाह

मध्यप्रदेश का स्थापना दिवस शुक्रवार को खंडवा जिले में हर्षोल्लास एवं समारोह पूर्वक मनाया गया। पुलिस परेड ग्राउण्ड में हुये जिलास्तरीय कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुर्नवास मंत्री डा. कुंवर विजय शाह ने राष्ट्रध्वज फहराया और मां भारती के चित्र पर दीप प्रज्जवलन कर उन्हें नमन किया।कार्यक्रम में जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि हमारी सरकार द्वारा सालों पहले मध्यप्रदेश स्थापना दिवस मनाने की शुरूआत की गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के बच्चे प्रदेश की तरक्की के बारे में जाने, समझें, साथ ही हमारी कला,

प्रति प्रेम, गौरव, इसकी तरक्की, राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान जताने का दिन हमें 1 नवम्बर को मिला है। उन्होंने कहा कि सौभाग्य से आज ही के पावन दिन 1 नवम्बर को मेरा जन्म हुआ। मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि हमारे संस्कृति, सभ्यता, विरासत, रीति-रिवाज को भी जानें, इसके लिए भविष्य में भव्य कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। मंत्री डॉ. शाह ने जिलेवासियों को अपनी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की ओर से मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में खंडवा के शासकीय उत्कृष्ट रायचंद नागड़ा स्कूल एवं शासकीय एम.एल.बी. स्कूल की छात्राओं ने राजस्थानी एवं गणगौर लोकनृत्य पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम समापन पर मध्यप्रदेश गान प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर खंडवा महापौर श्रीमती अमृता यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पिंकी वानखेड़े, कलेक्टर अनूप कुमार सिंह सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं नागरिक उपस्थित थे।

इंदिरा गांधी और लौह पुरुष को कांग्रेस जनों ने नमन किया

ग्वालियर । शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ देवेन्द्र शर्मा की अध्यक्षता एवं विधायक डॉ. सतीश सिकरवार की उपस्थिति में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रीमती इंदिरा गांधी जी की 40वीं पुण्यतिथि एवं देश के प्रथम गृहमंत्री लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 149वीं जयंती पर शहर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा छत्री बाजार स्थित लेडिज पार्क में स्थापित भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी की प्रतिमा पर एवं देश के प्रथम गृह मंत्री लौह पुरुष श्री वल्लभ भाई पटेल के चित्र पर सभी कांग्रेसजनों ने माल्यार्पण कर पुष्पांजली देकर नमन किया।शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ देवेन्द्र शर्मा ने सभी कांग्रेसजनो को संबोधित करते हुए कहा कि भारत देश के प्रति श्रीमती इंदिरा गांधी जी के बलिदान एवं देश के लिये किये गये विकास कार्यो एवं भारत देश को आत्मनिर्भर बनाने में उनके द्वारा किए गए सशक्त कार्यो को भारत का प्रत्येक नागरिक सदैव स्मरण करता रहेगा एवं आदर्श के रूप में मानता रहेगा। श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने जीवन की अंतिम सांस तक देश की एकता एवं अखण्डता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, श्रीमती इंदिरा गांधी जी की शख्सियत महिलाओं

को आत्मनिर्भर, निडर, निर्भीक, साक्षर एवं उनके अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरणादायी के रूप में पहचानी जाती रहेगी। शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ देवेन्द्र शर्मा ने भारत के प्रथम गृहमंत्री लौहपुरूश सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सरदार पटेल ने देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी के नेतृत्व में श्री पटेल ने गृहमंत्री के रूप में भारत की सेनाओं को मजबूत नेतृत्व प्रदान किया तथा सूबो में बटा हुआ देश जिनकी संख्या लगभग 575 से अधिक थी देश की इन विभिन्न रियासतों के शासन को भारत में सम्मलित कराकर एक सशक्त भारत का निर्माण किया और धर्मनिरपेक्ष राष्ट बनाने के संकल्प को पूरा किया। उन्होनें देश में लोकतंत्र की जड़े मजबूत करने के लिए अनेक कड़े कदम उठायें उनकी दृड़ इच्छा एवं आत्मविष्वास के कारण ही देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में सरदार वल्लभ भाई पटेल जी को लौहपुरूष के नाम से जाना जाता है।कार्यक्रम में कार्यवाहक अध्यक्ष महाराज सिंह पटेल, वीर सिंह तौमर, प्रदेष सचिव राहुल शर्मा, दशरथ सिंह गुर्जर, चतुर्भुज धनोलिया, सरमन राय, जे.एच जाफरी, मेहबूब खां चेन वाले, भैयालाल भटनागर, रशीद पहलवान, तरूण यादव, नीरज यादव, देशराज भार्गव, रमेश राजपूत, ब्लॉक अध्यक्ष अनूप शिवहरे, महादेव अपोरिया, राजेश खान, कैलाश चावला, सोहेल खान, आसिफ अली, भूपेन्द्र तौमर, संजीव दीक्षित, कुलदीप मगरैया, पट्टू पांडे, राकेश बाथम, गोविंद दास अग्रवाल, नाजिम खान, राजेश जाटव सहित अनेक कांग्रेसजन उपस्थित थे।

धार्मिक आयोजन और पर्यावरण-संरक्षण के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी का पर्व है गोवर्धन पूजा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री मंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गोवर्धन पूजा, धार्मिक आयोजन ही नहीं बल्कि पर्यावरण-संरक्षण, कृषि और पशुधन के प्रति समाज की जिम्मेदारी का भी पर्व हैं। गोवर्धन पूजा के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं के प्रति श्रद्धा और कृषि से जुड़ी परंपराओं को बनाए रखने का संदेश भी जाता है। इससे स्थानीय समुदाय को एकजुट होकर अपनी परंपराओं को जीवित रखने की प्रेरणा मिलती है। इसे दृष्टिगत रखते हुए हमने इस वर्ष गौवर्धन पूजा को वृहद पैमाने पर पूरे प्रदेश में सरकार की सहभागिता के साथ मनाने का निर्णय लिया है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गोवर्धन पूजा, पर्यावरण और पशुधन-संरक्षण का भी संदेश देता है, जो कृषि और आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से हम प्रकृति और पशुधन के महत्व को नई पीढ़ी तक पहुंचा सकते हैं। उन्होंने कहा

गोवर्धन पूजा का उद्देश्य न केवल धार्मिक बल्कि आर्थिक और पारिस्थितिकीय महत्व से जन-जन को अवगत करना है, जो एक सतत और समर्थ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में सहायक है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गाय को भारतीय संस्कृति में ÷गौ-माता÷ का दर्जा दिया गया है। विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों और त्यौहारों में गाय का पूजन होता है। यह भारतीय समाज में गहरी धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी हुई है। लम्बे समय से हर घर में गाय पालने की परंपरा रही है, जिससे ग्रामीण समाज में एकता, सामंजस्य और सहयोग की भावना प्रबल होती थी। मध्यप्रदेश में किसानों एवं पशुपालकों को लाभान्वित करने के लिये सरकार निजी और शासकीय दोनो तरह की गौशालाओं को प्रोत्साहित कर सहयोग कर रही हैं।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शास्त्रों में भी बताया गया है कि गाय उसी प्रकार पवित्र होती है जैसे नदियों में गंगा। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरूप भी माना गया है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख-समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ-माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती हैं। गौवंश सम्पूर्ण मानव जाति के लिए पूजनीय और आदरणीय है। यह पर्व भारतीय जनमानस को उनकी जड़ों से जोड़े रखता है और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना को प्रदर्शित करता है। यह हमारी संस्कृति और परंपरा के संवर्धन का प्रतीक भी है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौवंश संरक्षण समाज में सांस्कृतिक मूल्यों का प्रसारक है और इसकी सेवा से समाज में करुणा, संवेदनशीलता और एकजुटता की भावना बढ़ती है। गौ-माता हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना की स्रोत भी हैं। गौ-माता की सेवा, सम्मान एवं संवर्धन के लिए मध्यप्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। पशुपालन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते रहे हैं। दूध और उससे बने उत्पादों को बेचकर ग्रामीणों को हमेशा आय का स्त्रोत मिलता रहा है। भारत दुग्ध उत्पादन के मामले में विश्व में शीर्ष स्थान पर है और इस सफलता में गोवंश का महत्वपूर्ण योगदान है। देश में दुग्ध उत्पादन, अर्थव्यवस्था का एक अहम हिस्सा है और लाखों ग्रामीण परिवारों की आजीविका का साधन भी है।

दुग्ध उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में तीसरे स्थान पर-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश, देश के कुल दुग्ध उत्पादन का 9 से 10 प्रतिशत उत्पादन करते हुए देश में तीसरे स्थान पर है। प्रदेश के अनेक ग्रामों में किसान भाइयों को पशुपालन और दुग्ध उत्पादन के लिए सुविधाएं प्रदान कर प्रदेश को देश में अग्रणी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। प्रदेश में प्रतिदिन साढ़े पांच करोड़ लीटर दुग्ध उत्पादन हो रहा है। प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता के मामले में मध्यप्रदेश की स्थिति राष्ट्रीय औसत से बेहतर है। जहां देश में प्रति व्यक्ति 459 ग्राम प्रतिदिन दूध की उपलब्धता है वहीं मध्यप्रदेश में यह 644 ग्राम है। अगले पांच वर्ष में प्रदेश का दुग्ध उत्पादन दोगुना करने का लक्ष्य है। इस दिशा में लगभग 40 हजार ग्रामों में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के कार्य शुरू हो चुका है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय अनूपपुर में मनाई गयी दीपावली

अनूपपुर। दीपावली के पावन पर्व के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय अनूपपुर में स्वयंसेवकों ने भारत माता की आरती करके दीप प्रज्वलन किया और दीपावली पर्व मनाया। इस अवसर पर संघ के जिला संघ चालक राजेन्द्र तिवारी , नीतेश जी, पसान नगरपालिका अध्यक्ष राम अवध सिंह, भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला मीडिया प्रभारी मनोज द्विवेदी, जिला व्यवस्था प्रमुख हरिशंकर वर्मा, भारत विकास परिषद के अध्यक्ष राजकिशोर तिवारी, दिलीप शर्मा, एडवोकेट अरुण सिंह अप्पू , आशुतोष तिवारी, दिलीप शर्मा अनूपपुर, मोहन पटेल , मनोज मिश्रा , अरविन्द तिवारी, पुष्पेन्द्र जी, कमलाकर गौतम, मनोज वर्मन, मिन्टू सिंह के साथ अन्य स्वयंसेवकों ने पूरे विधि - विधान से पूजन - अर्चन कर दीपावली का पर्व पूरे भक्ति भाव से मनाया। संघ कार्यालय के सभागार में स्वयंसेवकों ने भगवान श्री गणपति, माता लक्ष्मी जी , भारत माता की झांकी सजाई थी। जिला संघ चालक के साथ सभी स्वयंसेवकों ने पूरे विधि विधान से पूजा किया। प्रतिमाओं को पुष्प, नैवेद्य अर्पित करके दीप प्रज्वलित कर भगवान विष्णु की ,लक्ष्मी माता की पूजा आराधना करके परिवार , समाज , देश में शांति,खुशहाली और मजबूती के लिये प्रार्थना करते हुए समवेत स्वर से भारत माता की आरती की और कार्यालय परिसर को दीपमालाओं से सुसज्जित किया।इसके उपरांत एक दूसरे को दीपावली की बधाईयां देते हुए7 मिष्ठान्न वितरण किया और पटाखे फोड़े गये।

ग्वालियर मेले की तैयारियां शुरू, 25 दिसम्बर से 25 फरवरी तक लगेगा ऐतिहासिक ग्वालियर मेला

ग्वालियर। श्रीमंत माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला की तैयारियाँ जोर-शोर से जारी हैं। संभाग आयुक्त मनोज खत्री मेले की तैयारियों पर स्वयं नजर रख रहे हैं। संभाग आयुक्त के निर्देश पर मेला की व्यवस्थाओं से संबंधित विभिन्न कार्यों की निविदाएँ विधिवत आमंत्रित की जा चुकी हैं। यह सभी निविदाएँ पोर्टल https://mptenders.gov.in के माध्यम से ऑनलाइन आमंत्रित की गई हैं। दैनिक समाचार पत्रों में गत 30 अक्टूबर को इन निविदाओं का प्रकाशन भी हो चुका है। इस बार ऐतिहासिक ग्वालियर मेले का आयोजन 25 दिसम्बर से 25 फरवरी तक होगा। ग्वालियर व्यापार मेला प्राधिकरण के सचिव से प्राप्त जानकारी के अनुसार ऑनलाइन निविदाएँ 11 नवम्बर को दोपहर 12 बजे तक प्रस्तुत की जा सकती हैं। पोर्टल पर प्राप्त निविदाएँ 12 नवम्बर को दोपहर 12 बजे खोली जायेंगीं। मेला की व्यवस्थाओं से संबंधित कार्यों के ठेके लेने के इच्छुक व्यक्ति एवं संस्थायें निर्धारित तिथि तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। पोर्टल पर निविदा की शर्तें उपलब्ध हैं। ग्वालियर व्यापार मेला में टीनशेड, बेरीकेटिंग, माइक, टेंट, टैक्सी, अस्थायी विद्युत फिटिंग, सजावट कार्य व सुरक्षा गार्ड व्यवस्था इत्यादि के ठेके के लिये पोर्टल पर निविदाएँ अपलोड कर दी गई हैं। इसके अलावा फ्लैक्स प्रिंटिंग कार्य, अस्थायी सीसीटीव्ही कैमरा, मंच पर प्रकाश व्यवस्था, सम्पूर्ण मेला परिसर की साफ-सफाई शिल्प बाजार की दुकानें तैयार करने, सीवर संधारण, होर्डिंग, दुपहिया व चार पहिया वाहन पार्किंग, पब्लिक एनाउंसमेंट सिस्टम, स्वच्छता परिसरों की साफ-सफाई, पानी की लाइन बिछाने इत्यादि व्यवस्थाओं के संबंध में भी निविदाएँ पोर्टल पर अपलोड की गई हैं। साथ ही विधिवत विज्ञापन भी प्रकाशित कराया गया है।

संभाग आयुक्त, कलेक्टर एवं जिला पंचायत सीईओ ने वृद्धाश्रम में मनाई दीपावली

ग्वालियर। दीपोत्सव के पावन अवसर पर अपने बीच वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को पाकर वृद्धजनों की खुशी देखते ही बनी। नेहरू कॉलोनी ठाठीपुर स्थित मंगलधाम वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों के साथ संभाग आयुक्त मनोज खत्री, कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार दीपावली मनाने पहुँचे थे। इस आश्रम में लगभग 20 वृद्धजन निवासरत हैं। संभाग आयुक्त मनोज खत्री एवं कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने जब वृद्धाश्रम के रहवासी वरिष्ठ जनों का फूल-मालाओं एवं शॉल-श्रीफल से आत्मीय स्वागत किया तो सभी भाव विभोर हो गए। इन सभी बुजुर्गों को वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने मिष्ठान एवं फुलझ?ी इत्यादि आतिशबाजी की किट भी भेंट की। साथ ही सभी के साथ दीप मालाएँ प्रज्वलित कर एवं फुलझ[ ]ी चलाकर दीपावली मनाई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 2 नवम्बर को ग्वालियर में दो स्थानों पर गोवर्धन पूजा में होंगे शामिल

लाल टिपारा गौशाला में करेंगे गोवर्धन पूजा और मध्यप्रदेश स्थापना दिवस कार्यक्रम में भाग लेंगे पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया के निवास पर भी गोवर्धन पूजा में होंगे शामिल

लाल टिपारा कार्यक्रम में गोवर्धन पूजा के साथ होंगे रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम की तैयारियों का कलेक्टर एवं एसपी ने लिया जायजा

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार 2 नवम्बर को ग्वालियर एवं चंबल संभाग के प्रवास पर आयेंगे मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस दिन पहले श्योपुर जिले के प्रवास पर जायेंगे इसके बाद अपरान्ह लगभग 3.30 बजे वायु मार्ग द्वारा ग्वालियर पहुँचेंगे मुख्यमंत्री डॉ. यादव ग्वालियर में दो स्थानों पर गोवर्धन पूजा कार्यक्रम में शामिल होंगे ज्ञात हो मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल पर राज्य सरकार द्वारा पूरे प्रदेश के हर जिले की गौशालाओं में गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से गोवर्धन पूजा व गौ-पूजन करने का निर्णय लिया गया हैप्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार मुख्यमंत्री डॉ. यादव श्योपुर जिले के प्रवास से लौटने के बाद ग्वालियर में भगतसिंह नगर स्थित पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया के निवास पर पहुँचकर गोवर्धन पूजा में शामिल होंगे इसके बाद लाल टिपारा स्थित आदर्श गौशाला जायेंगे और वहाँ पर गोवर्धन पूजा एवं मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के जिला स्तरीय समारोह में शामिल होंगे। भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा के अनुसार मुख्यमंत्री डॉ. यादव लाल टिपारा गौशाला में गौ-पूजन एवं गोवर्धन पूजा कर प्रदेश की खुशहाली की कामना करेंगे। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम व प्रतियोगितायें होंगी। कार्यक्रम स्थल पर मक्खन व श्रीखण्ड तथा गोबर शिल्प, जैविक खाद व सीएनजी सहित पंचगव्य से निर्मित 11 प्रकार के उत्पादों की प्रदर्शनी लगेगी लाल टिपारा गौशाला में गोवर्धन पूजा एवं मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह में मथुरा के कलाकारों द्वारा लोकनृत्य व भजन प्रस्तुत किए जायेंगे। साथ ही इस अवसर पर चित्रकला, फैंसी ड्रेस, लोकगीत व पारंपरिक खेल सितौलिया प्रतियोगिता भी होगी। कृष्ण, राधा व ग्वाला - ग्वालिनों के रूप में सजे-धजे बच्चे भी कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण होंगे। पूर्व मंत्री श्री पवैया के निवास पर पहुँचकर तैयारियाँ देखीं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ग्वालियर प्रवास के दौरान भगतसिंह नगर स्थित पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया के निवास पर गोवर्धन पूजा कार्यक्रम में शामिल होंगे। कलेक्टर रुचिका चौहान एवं पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने शुक्रवार की शाम भगतसिंह नगर पहुँचकर इस कार्यक्रम के संबंध में पूर्व मंत्री श्री पवैया से चर्चा की और कार्यक्रम की तैयारियों की जानकारी ली। साथ ही संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि ऐसी व्यवस्था बनाएँ, जिससे स्थानीय निवासियों को कोई दिक्कत न हो। साथ ही मुख्यमंत्री डॉ. यादव सहित अन्य अतिथिगण व श्रद्धालु गोवर्धन पूजा स्थल पर सुविधाजनक तरीके से पहुँच सकें। निरीक्षण के दौरान नगर निगम आयुक्त अमन वैष्णव, अपर कलेक्टर टी एन सिंह, अपर आयुक्त नगर निगम मुनीष सिकरवार, एसडीएम अशोक चौहान व अतुल सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे..!!!

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478